स्वागत है.....

यह मेमना कौन है ?

by Larry Chkoref

Version 1.1
First printing – Spring, 2003
Second printing Fall, 2003

Copyright © 2002 by Larry Chkoref
Published by International School of the Bible, Marietta, Georgia, U.S.A.

This material is the sole property of the author. It may be reproduced freely, but only in its entirety for free circulation, without charge. It may not be altered without the express written consent of the author. It may not be altered or edited in any way. This material may not be used without the permission of the author for resale or the enhancement of any other product sold.

Some pictures, including the cover art, were obtained from New Tribes Missions Art CD, www.ntm.org. Some picture were obtained from the web page of the "I Am Project" http://www.webservants.com/story/ and-www.Gods-story.org. These Picture are used by permission

An expanded version of this book is available at our web site, www.isob-bible.org.

For information on reproducing this book contact ISOB at:
Email address info@isob-bible.org

This Hindi translation and publication is through partnership with:

Kulvi Friends
Manali, H. P. India

कुल्वी फ्रेंड़स
मनाली, हि0. प्र0. भारत

पैसे कमाने के लिए नहीं
Not for profit.

वि□ाय सुची

परिचय 4
अध्याय 1—बाइबल 5
अध्याय 2 —परमेश्वर 7
अध्याय 3 — स्वर्गदुत 9
अध्याय 4— उत्पत्ति 12
अध्याय 5— आदमी 15
अध्याय 6— मनु□य ने पाप किया 17
अध्याय 7— केन और हाबिल 21
अध्याय 8— नूह 23
अध्याय 9 — अब्राहम 28
अध्याय 10 — अब्राहम और इसहाक 32
अध्याय 11 — युसुफ 36
अध्याय 12 — मूसा 38
अध्याय 13 — मूसा के बारे मे 42
अध्याय 14 — वाचा का नवीनीकरण 45
अध्याय 15 — मरियम 47
अध्याय 16 — यीशु 51
अध्याय 17 — नरक 58
अध्याय 18 — यीशु कि गिरफतारी 62
अध्याय 19 — यीशु का □ूस पर चढाया जाना 65
अध्याय 20 — यीशु ही मेमना है 67
अध्याय 21 — यीशु का पुर्नउत्थानित होना 70
अध्याय 22 — प्रार्थना 75
अध्याय 23 — मूर्तियो से फिरना 76
अध्याय 24 — आजाद हो जाओ 78

परिचय

''यह मेमना कौन है?''

मेरे साथ इतिहास में घटित □मानुसार बातों को बाइबल के आधार पर देखिए और उसके लोगों की कहानियों को देखिए कि मेमना कैसे उनके जीवन से सम्वन्ध रखता है। देखिए परमेश्वर उनकी मुसीबतों व मुश्किलों में कैसे उनसे मिलता है व उनकी सहायता करता है और अपने आप से पुछिए कि मेमने का उनके जीवन में क्या योगदान था।

तब मुल्यांकन के लिए कि यह प्रश्न **''यह मेमना कौन है?''** का प्रश्न आपके हृदय में कभी था या यह प्रश्न आपके ७दय में होना चाहिए।

बाईबल ही क्यों? बाईबल ही एक ऐसी किताब है जो किसी भी संस्कृति, जाति और रा□ट÷ का सम्पूर्ण इतिहास हे इब्रीयों के इतिहास को मानव जाति के भारूआत, हजारों साल से पहली भाताब्दी तक रिकोर्ड कर के रखा गया है। चीन, अफ्रीका, अमेरिका, इंगलेड और हर एक संस्कृति और रा□ट÷ों के इतिहास में निरन्तरता देखने में नही आती है

बाइबल हमें बताती है कि कैसे परमेश्वर ने मनु□य से बातचीत। बाइबल ही सिर्फ एक ऐसी प्रीति है जिसमें 100% भात प्रत्याात इतिहास में घटी मुख्य घटनाओं की भवि□य बाणी मिलती है। बाइबल में सच्चाई है। यह मनु□य की असफलता को बताती है। और यह दिखाता है कि परमेश्वर कैसे उन्हें असफलताओं का प्रतिउक्कार देता है और इसमें बहुत से ऐतिहासिक कहानियां हैं जो आपसी सम्बन्ध, युद्धों और मनु□य की मुश्किलताओं को बताती है। यह हमें मदद करती है कि हम परमेश्वर और इतिहास से इमानदारिता में अवगत हो सकें

बाइबल हमें मेमने की कहानी के बारे में बताती है और यह उसका उक्कार देगी कि **"मेमना कौन है?"** हम सोचते है कि आप इस उत्साह पुर्ण कहानी का आनन्द लेंगें जैसे आप देखेगें की कैसे मेमने ने इतिहास में बहुत से लोगो को प्रभावित किया।

अध्याय 1
बाइबल

परमेश्वर जिसने मनु□य को बनाया **उनसे बातचीत करना चाहता था**। उसने अपने वचनों को एक किताब में लिख लेने का निर्णय लिया जिसे बाइबल कहा जाता है।

बाइबल को परमेश्वर का वचन कहा जाता है।

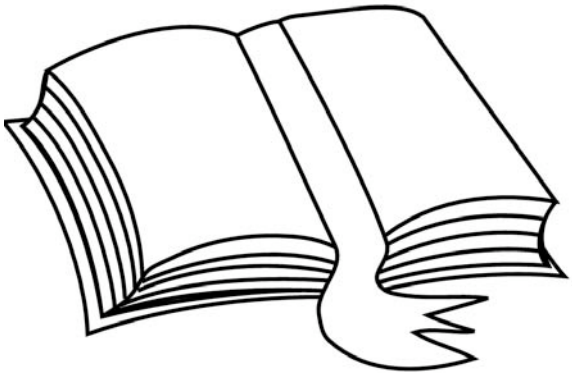

कैसे परमेश्वर ने अपने वचनों को किताब में डाला?

“सर्म्पूण पवित्र भाास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा है...” ऋ2तिमुथीयस 3:16ऋऋइब्रानियों 1:1ऋ

परमेश्वर मनु□य से बात करता है

1. परमेश्वर ने भवि□यवक्ताओ से बात चीत

2. लेखकों ने इसकी और प्रीतियाप्र बनाई

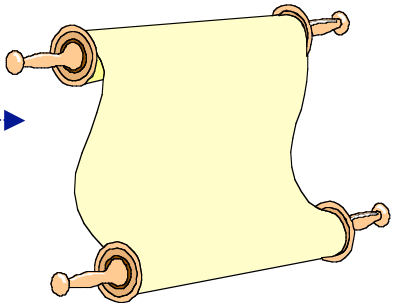

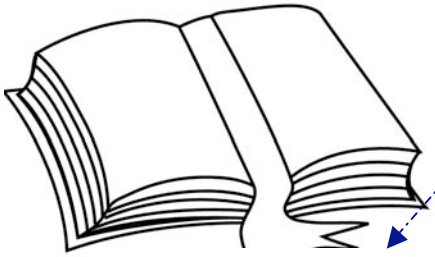

3. आज की बाईबल

अध्याय 2
परमेश्वर

ऋआदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृ□ट की'' ऋउत्पति 1:1ऋ

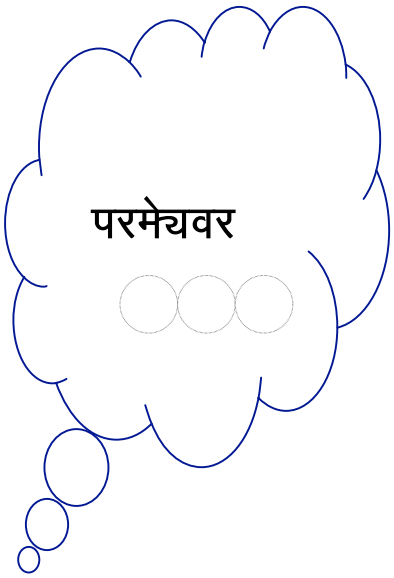

परमेश्वर अन्नत है। उसका न भुरूआत है न ही अन्त है।

कुछ तथ्य परमेश्वर के बारे में:

1. उसका नाम ''मैं हूँ'' है। ऋनि. 3:14ऋ
2. उसका नाम प्रभु है। ऋर्यिम. 10:6ऋ
3. उसका नाम परम प्रधान है। ऋभजन. 83:18ऋ
4. सिर्फ एक ही परमेश्वर है। ऋयश्याा 44:6ऋ
5. परमेश्वर आत्मा है। ऋयुहन्ना 4:24ऋ
6. किसी ने परमेश्वर को नहीं बनाया। वह हमेश्याा से जीवित था। ऋयुहन्ना 1:1–3 और उत्पति 21:33ऋ
7. वह सर्व भाक्तिमान है। ऋलुका 1:37ऋ
8. वह सब कुछ जानता है। ऋभजन 147:5ऋ
9. वह हमेश्याा उपस्थित रहता है। ऋर्यिम. 23:23–24ऋ

10 परमेश्वर को उसके भात्रु हरा नहीं सकते।

11. परमेश्वर प्रेम, आनंद, भाातिं, धीरज, दयालु, भला, क्विवासयोग्य, भद्र और आत्म संयमी है। ऋगलातियों 5:22–23ऋ

12. परमेश्वर हमेश्याा लोगों के लिए अच्छा है, बुरे लोगों के लिए भी। वह अपने असली भात्रु को खत्म करता है। ऋप्रकाियातवाक्य 20:10ऋ

13. परमेश्वर बूरे लोगो को खत्म करके उनके □पर जीत हासिल नहीं करता है। ऋरोमियों 12:21ऋ

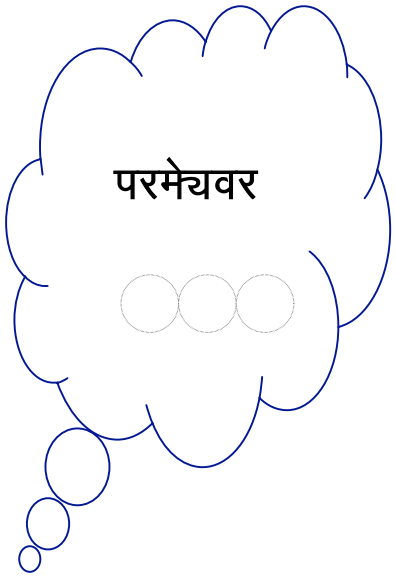

अध्याय 3
स्वर्गदूत

परमेश्वर महान है! उसने हर एक जीवित प्राणी को बनाया है। स्वर्गदूत को भी।

स्वर्गदूतो को परमेश्वर की सेवा करने के लिए बनाया। *परमेश्वर द्वारा मनु□य के बनाए जाने के बाद परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को उनकी सहायता करने के लिए खास भेजा था।*

स्वर्गदूत भाब्द का मतलव– संदेश वाहक या सेवक होता है। वे परमेश्वर के सहायक हैं।

परमेश्वर ने स्वगदूतो को बनाया

परमेश्वर अच्छा, सि़द्ध और पवित्र है। सब कुछ जो भी परमेश्वर ने बनाया है अच्छा है। हर एक स्वदूत भी अच्छे थे उनमें कोई भी बुरा नहीं था।

लूसिफर एक स्वर्गदूत था–वह बुरा बन गया। ऋयेहेजकेल 28:15ऋ

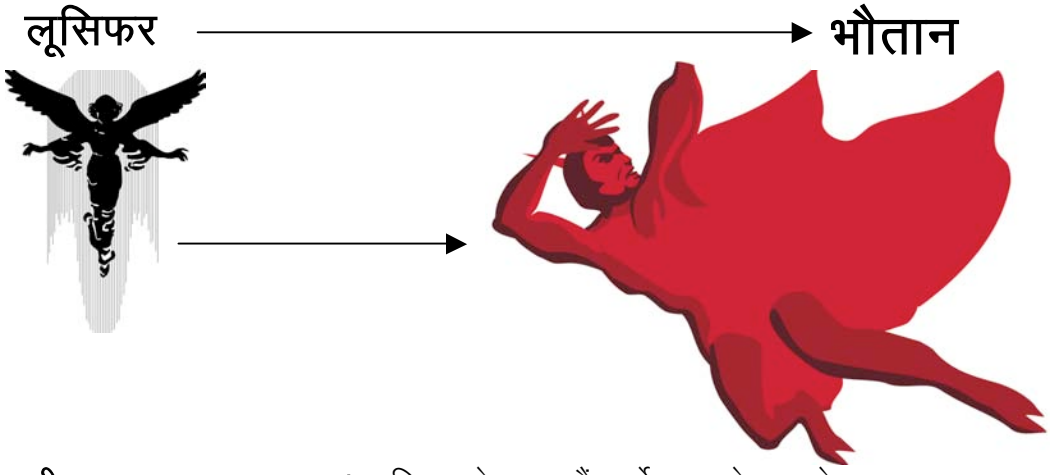

लूसिफर परमेश्वर की तरह बनना चाहता था। लूसिफर ने कहा–मैं सर्वोच्च परमेश्वर के समान बनुगा। ऋयशायाह 14:14ऋ

परमेश्वर ने लुसिफर को नया नाम दिया, भौतान

बाईबल हमे बताती है कि 1/3 स्वर्गदुत अब भौतान ऋलूसिफरऋ की सेवा करते हैं।
परमेश्वर ने भौतान और उसके अनुयायियों को ऋभौतानऋ अपने सेवक के स्थान से निकाल दिया

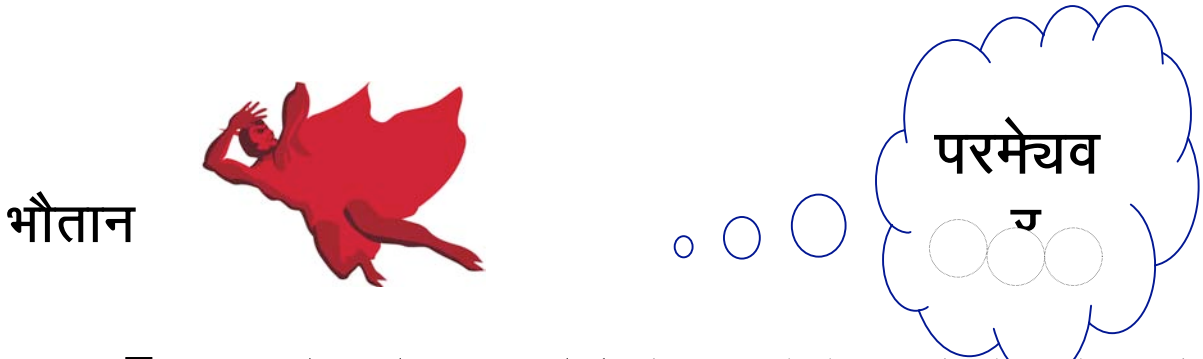

भौतान और उसकी दु□ट आत्मा परमेश्वर के विरूद्ध लडते हैं। भौतान झुठ बोलने बाला और धोखा देने बाला है। वह लोगों से नफरत करता हैं। परमेश्वर सत्य है वह लोगो से प्रेम करता है ऋयुहन्ना 8:44ऋ

भौतान और दु□ट आत्मा ऐसा प्रदर्शित करते है कि वे लोगो की सहायता कर रहें हैं, पर वो मारना, चोरी करना, और न□ट करना चाहते हैं दु□टआत्मा लोगों को तकलीफ पहुचाते हैं। ऋयुहन्ना 10:10ऋ

शैतान ने सांप की तरह दिखने कि कोशिश की। वह अलग–अलग तरीकों से दिखने की कोशिश करता है।

सांप शैतान

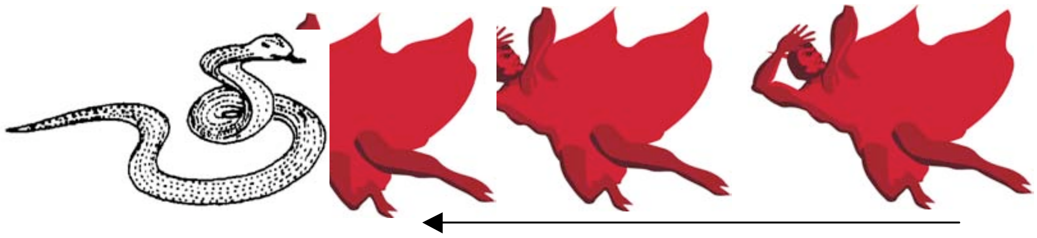

अध्याय 4
उत्पति

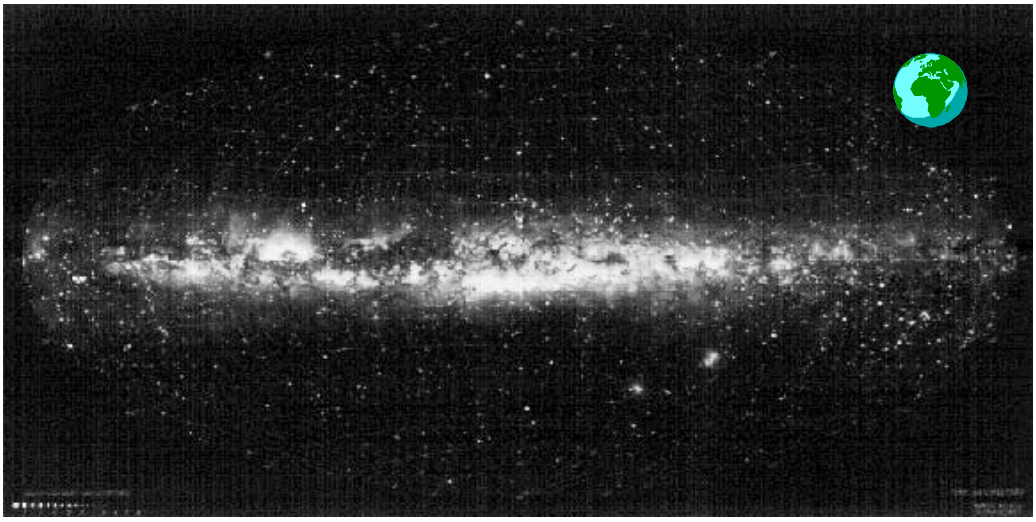

1. **ऋआदि में परमेश्वर** ने आकाश्र और पृथ्वी की रचना की। **ऋउत्पति** 1:1ऋ

2. परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी को बिना किसी की सहायता से बनाया।ऋबनाया, का मतलव ऋबिना किसी चीज़ के इस्तेमाल से बनाना, उसको बनाने के लिए किसी चीज की जरूरत नहीं थी, परन्तु सिर्फ भाब्दो के द्वारा बनाया। जब परमेश्वर ने अपने वचन को कहा, सब कुछ बिना किसी चीज की सहायता के वैगर बन गया।

प्रमेश्वर ने कहा....

“उजियाला हो”

उजियाला हो गया

3. **परमेश्वर सर्व□ाक्तिमान है।**

4. **परमेश्वर सर्वज्ञानी है।**

5. **पहले दिन परमेश्वर ने ज्योति बनाई।**

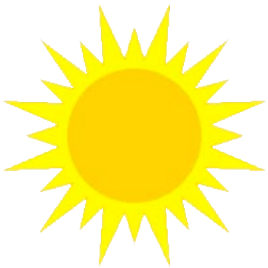

6. **दूसरे दिन परमेश्वर ने आकाश्र बनाया।** यह आकाश्र में एक परत की तरह है जो कई चीजो से बना होता है यहा तक पानी से भी। इसे वातावरण भी कहते हैं।

7. तीसरे दिन परमेश्वर ने सूखी भुमि समुंद्र और वनस्पति और बीजों को बनाया। ऋउत्पति 1:9–13ऋ

8. परमेश्वर प्रेम है। ऋ...जीवित परमेश्वर–जो हमारे सुख के लिए सब कुछ वहुतायात से देता है।ृ ऋ1 तीमुथियुस 6:17ऋ

परमेश्वर चाहता था कि हम हर चीजों का आनन्द ले जो उसने बनाई है। उसने हमें खाने के लिए पेड पौधे दिए, और उसमे उसने बीज भी डाले ताकि उससे और भी फसल पैदा हो सके।

9. चोथे दिन परमेश्वर ने सूरज, चौंद, और तारों को बनाया।

10. पाचवें दिन परमेश्वर ने जल, जन्तु और पक्षी बनाए।

11. छठें दिन परमेश्वर ने जीव–जन्तुओं को बनाया।
तब परमेश्वर ने कहा पृथ्वी हर एक जाति के जीवित प्राणी उत्पन्न करें...ृ ऋउत्पति 1:24,25ऋ

12. छठें दिन परमेश्वर ने मनु□य को बनाया। ऋतब परमेश्वर ने कहा, हम मनु□यो को अपने स्वरूप में अपनी समानता के अनुसार बनाएं.....ऋउत्पति 1:26ऋ

ऋतब परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिटटी से रचा। और जीवन का च्वास आदम की नाक में फूंका, तब आदमी जीवित प्राणी बन गया॰ ऋउत्पति 2:7ऋ

आदम के अंदर परमेश्वर की पवित्र आत्मा थी।

अध्याय 5
आदमी

"परमे□वर ने मनु□य को अपने स्वरूप में सश्जा। अपने ही स्वरूप में परमे□वर ने उसको सश्जा। उसने नर और नारी करके उनकी सश□ट की।" (उत्पति 1:27). "मनुष्य" □ाब्द का मतलब आदम है। "मनुष्य" आदमी और औरत (आदमी–औरत).

"परमे□वर ने मनु□य को भूमि की मिटटी से रचा, और जीवन का स्वास मनु□य की नाक में फूंका, और मनु□य जीवित प्राणी बन गया" (उत्पति 2:7).

परमेश्वर ने अपनी पवित्र आत्मा आदम में डाली ताकि वे नजदीकी मित्र बन जाएं।

परमे□वर ने मनु□य को जानवरों से अलग क्यों बनाया? परमे□वर ने क्यों मनु□य को अपने स्वरूप में बनाया? यह इसलिए क्यों कि परमे□वर उससे मित्रता करना चाहता था। परमे□वर उससे बातचीत करना चाहता था, वह चाहता था मनु□य उससे और वह मनु□य से दोस्त की तरह बातचीत करें। जानवर परमे□वर को जान नहीं सकते; वे उससे बातचीत नहीं कर सकते। परमे□वर ने अपनी आत्मा पहले मनु□य "आदम" के अन्दर डाली ताकि वे मित्र बन सके।

आदमी	मित्रता	परमेश्वर

परमेश्वर ने अदन की वाटिका बनाई और जो कुछ आदम को जरूरत थी उसमे रखा।

“तब परमेॆवर ने मनु□य को आदम की वाटिका मे रखा की वह उसकी बागवानी और देख–भाल करे।फिर यहोवा परमेॆवर ने आदम को यह कह कर आज्ञा दीः ''तू वाटिका के किसी भी पेड़ का फल बेखटके खा सकता है, परन्तु जो भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष हैं–उस में से कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसमें से खाएगा उसी दिन तू अव्यय मर जाएगा” (उत्पति 2:15-17).

परमेश्वर आदम को अकेला नही देखना चाहता था, इसलिए हव्वा को उसने उसकी पसली मे से निकाला और फिर भादी के द्वारा उन्हें फिर मिलाया।

“...तब यहोवा परमेॆवर ने आदम मे से निकाली गई उस पसली से एक स्त्री की रचना करके, उसे आदम के पास ले आया (उत्पक्ति 2:22).

अध्याय 6
मनु□य ने पाप किया

आदम और हव्वा की परिक्षा की घडी।

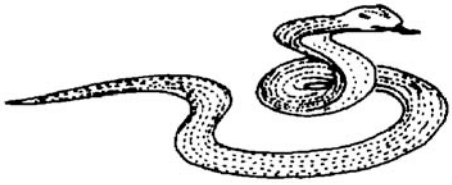

क्या परमेश्वर ने वाटिका के सारे पेडो के फल खाने को मना किया है?' (उत्पति 3:1)

भौतान र्सप के रूप मे आया। उसने हव्वा को बताया की उसे उस पेड मे से खाना चाहिए जिस से

परमेश्वर ने कहा था मत खाना। उसने हव्वा को मुर्ख बनाया और उसने बुरा फल खाया और उसे अपने पति आदम को भी दिया। उन्होने परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना। (उत्पति 3:1-6)

भौतान आज भी लोगो को मुर्ख बना रहा है। भौतान ने परमेश्वर को झुठा ठहराया।

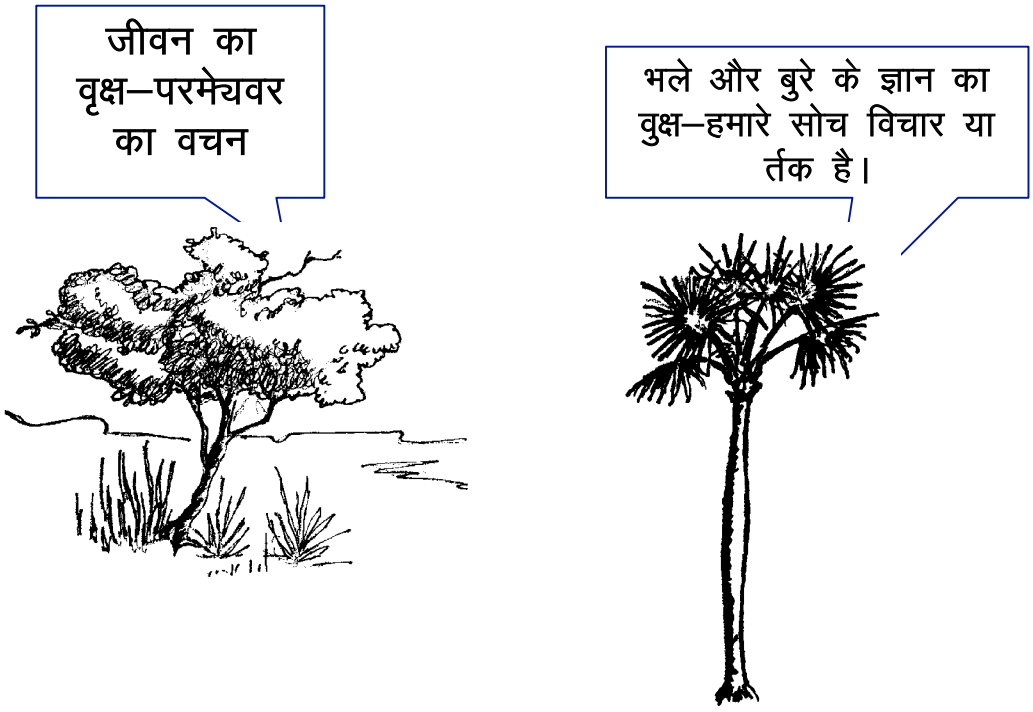

आदम और हव्वा ने परमेश्वर से सम्बन्ध को तोड दिया। उन्होने परमेश्वर के बिना जीवन जीने का चुनाव कर किया।

परमेश्वर के बिना जीना – पाप कहलाया।

पाप मृत्यु को ले कर आया। मृत्यु अलग होना है।

आदम परमेश्वर से अलग हो गया था।

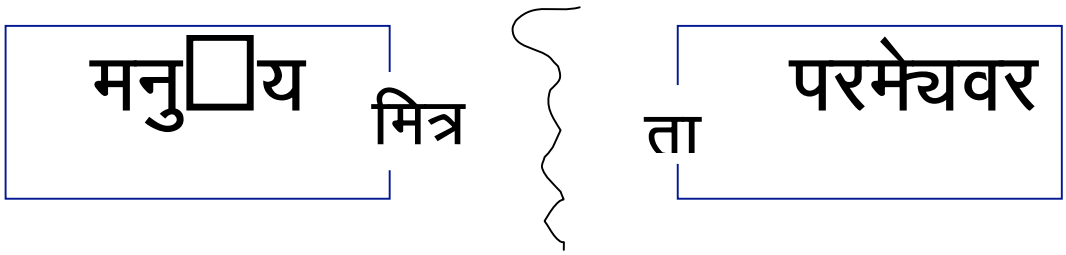

परमेश्वर आदम को दण्ड नहीं दे रहा था। आदम ने अपना सम्बन्ध परमेश्वर से तोड़ा था।

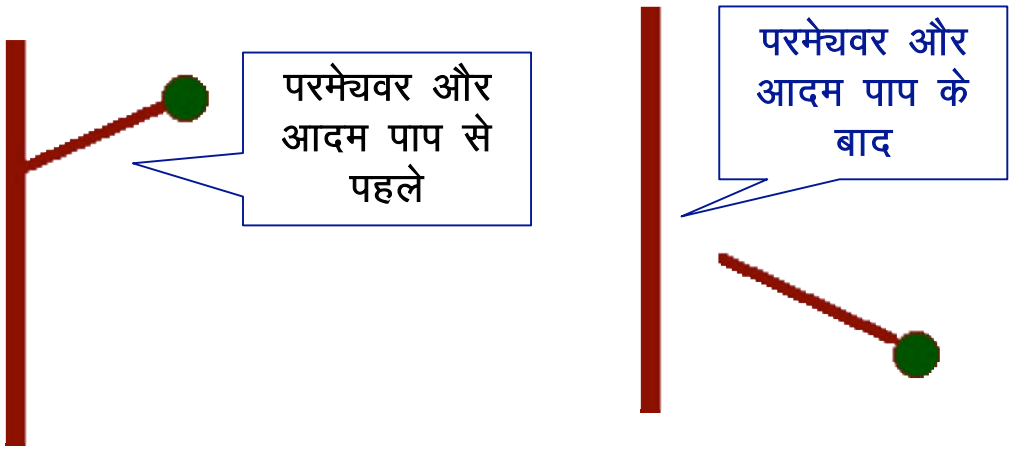

आदम और हव्वा ने अपने पाप ढांपने की कोशिश की।

"तब उन दोनो की आखें खुल गयी, और उन्हें मालुम हुआ की हम तो नंगे हैं। और उन्होने अंजीर के पतों को जोड–जोड कर अपने लिए लंगोट बना लिया। (उत्पति 3:7).

पतों को जोड के हमारे पाप को ढापंने का मतलब ऐसा है जैसे परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए अपने तरीको द्वारा धर्म के काम करना।

परमेश्वर के पास अलग योजना है। उसने अंजीर के पतों को स्वीकार नहीं किया।

परमेश्वर आदम और हव्वा से इतना प्यार करता था कि आदम की जगह ***वायदा किया हुआ*** छुडाने वाला ***(मसीहा)*** मरेगा। परमेश्वर लोगो की सहायता करना चाहता है जो दुःख में है, ऐसे लोगों की भी जो खुद को ही दुःख देते रहते हैं।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा से वायदा किया कि उनके वंश से एक वायदा किया हुआ मसीहा आयेगा और वो भौतान को हराएगा। (उत्पति 3:15)।

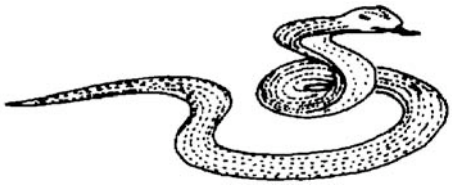

औरत का वंश भौतान को नष्ट करेगा और मसीहा औरत के वंश से पैदा होगा।

तो भी जब तक वायदा किया हुआ मसीहा नहीं आ जाता, परमेश्वर ने जानवर को मार कर आदम को उसके पाप ढांपने के लिए दिया।

परमेश्वर ने एक निर्दो□ा जानवर का लहू वहाया ताकि आदम जीवित रह सके।

"मेमना कौन है?"

"और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिए चमड़े के वस्त्र बनाकर उनको पहना दिए।" (उत्पक्ति 3:21).

परमेश्वर ने आदम को बताया था कि अगर वो आज्ञा को तोडेगा तो वो मर जाएगा। पाप हमेशा मृत्यु को ले कर आता है। मृत्यु का मतलव अलग होना है।

परमेश्वर आदम और हव्वा को वापिस अदन की वाटिका मे नहीं जाने देना चाहता था। (उत्पति 3:22-24).

परमेश्वर आदम और हव्वा के लिए अच्छा बनना चाहता था। यदि वो पृथ्वी मे हमेशा परमेश्वर से अलग हो कर रहेंगे तो वो हमेशा दुःख भरी जिन्दगी जियेंगे।

अध्याय 7
कैन और हाविल

उत्पति अध्याय 4:1-15

आदम और हव्वा के पहले बच्चों के नाम कैन और हाविल थे। हाविल ने भेडों की देख भाल की और कैन के पास फलों का बगीचा था।

आदम और हव्वा ने अपने बच्चों को सिखाया की वे अपने पाप के लिए जानवरों की भेंट चढांए ताकि वो परमेश्वर से सम्वन्ध को बना सके। और वे उसके अच्छे मित्र बन सके।

हाविल ने जानवर की भेंट प्रभु के पास लाई।

कैन ने केवल फलों को अपने बगीचे से भेंट के रूप में लाया।

परमेश्वर ने हाविल के द्वारा जानवर और उसके लहु की भेंट को स्वीकार किया।

परमेश्वर ने कैन द्वारा लाई हुई भुमि की फसल को स्वीकार नहीं किया।

परमेश्वर ने कैन को दूसरा मौका दिया कि वो जानवर की भेंट को ले के आए। (उत्पति 4:7)

परमेश्वर ने कैन को चिताया कि पाप द्वार पर दुवका बैठा है।

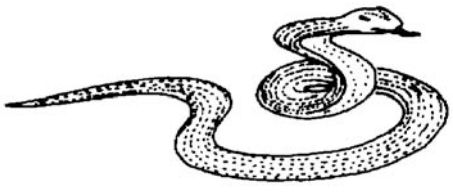

कैन ने परमेश्वर द्वारा इस दी इस चेतावनी को नहीं माना।
कैन ने अपने भाई हाविल को मार डाला जब वो खेत में थे।

कैन फलों के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता था। परमेश्वर लहु का बलीदान चाहता था। हाविल लहु का बलिदान लाया।

परमेश्वर के साथ मज़बूत दोस्ती करने का उसका तरीका है कि लोगों को अपने पापों के लिए निर्दो□ा का लहु बहाना पडेगा।

आदमी

मित्र

ता

परमेश्वर

अध्याय 8
नूह

आदम से नूह तक की वंशावली।

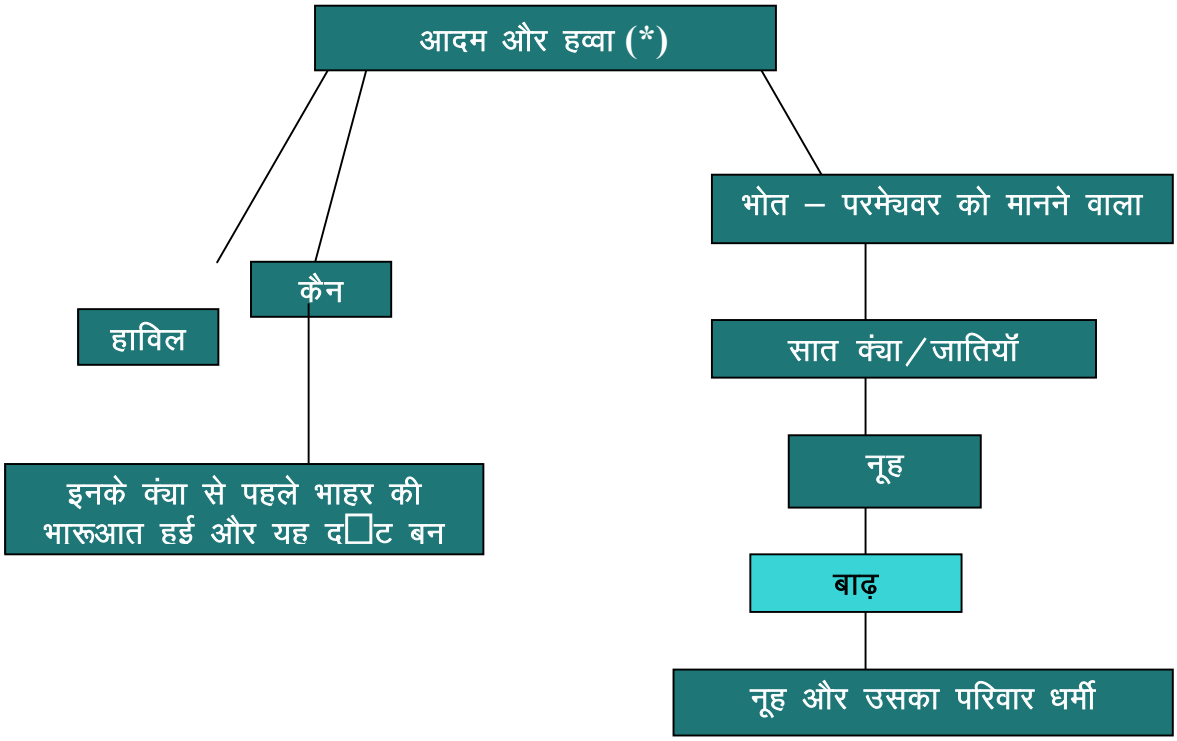

लोग बहुत बुरे और दु□ट बन गये थे। (उत्पति 6:5,6)

वो लोग पियक्कड़, परस्त्रीगमन करने वाले और बहुत सारी दूसरी शैतान की चीजों में लिप्त थे।

परमेश्वर को बहुत आघात पहुंचा क्योकि वो मनु□य से बहुत प्यार करता था।क्या आप के माता – पिता को भी दु:ख पहुंचेगा अगर आप बुरा जीवन व्यतीत कर रहें हो तो?

क्या आप को दु:ख होगा यदि आप के बच्चे बुरा जीवन व्यतीत कर रहें हो?

नूह एक ईश्वरीय मनु□य था। नूह की परमेश्वर के साथ दोस्ती थी। नूह ने तीन बच्चों को जन्म दिया: शेम, हाम, येपेत। परन्तु नूह को फिर भी मेमने की आवश्यकता थी। (उत्पति 6:9-10)।

“परन्तु नूह ने परमेश्वर की नज़र में अनुग्रह पाया।” (उत्पति 6:8).

अनुग्रह का मतलव परमेश्वर ने नूह को वो दे दिया जिसके लायक वो नहीं था और न ही उसने उसके लिए कोई कार्य किया। अनुग्रह का मतलव कि हम जो दण्ड पाने वाले थे उसको हम नहीं पाते।

क्यों नूह ने परमेश्वर की नज़र में अनुग्रह पाया?

नूह ने परमेश्वर को होम वलि चढाई। नूह का विश्वास ***वायदा किये हुए मसीह*** के उपर था। (उत्पति 8:20)

नूह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने परमेश्वर के लिए होमवलि चढाई। "...नूह परमेश्वर के साथ–साथ चलता था। (उत्पति 6:9).

परमेश्वर ने नूह को एक जहाज़ या किश्ती बनाने के लिए कहा। (उत्पति 6:14)

यह परमेश्वर की योजना थी। नूह ने एक जहाज़ बनाया था। परमेश्वर ने नूह को जहाज़ का सही माप दिया था।

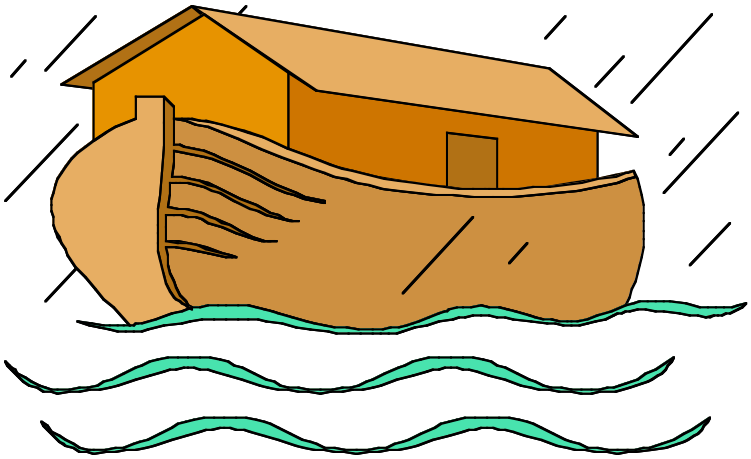

परमेश्वर ने नूह को बताया कि वो अपने परिवार सहित जहाज़ में जाए। उसने जानवरों को ले जाने के लिए भी कहा और परिवार व जानवरों के लिए भी खाना ले जाने के लिए कहा।

पर में तेरे साथ वाचा बांधता हूप्र; इसिलए तू अपने पुत्रों, अपनी पत्नी और बहुओं के साथ जहाज़ में प्रवेश करना" (उत्पति 6:18).

"... और पृथ्वी पर रात–दिन चालीस दिन तक व□ार्ा होती रही। (उत्पति 7:11,12)

150 दिनो के बाद बाढ़ रूक गयी। (उत्पति 8:3,4).

“तब नूह अपने पूत्रों अपनी पत्नी और बहूओं सहित बाहर निकल आया। ऋएक साल और दस दिन जहाज़ के अन्दर रहने के बादऋ” (उत्पति 8:18)

परमेश्वर ने नूह से वायदा किया की वो फिर कभी बाढ़ के द्वारा मनु□य को नाश्या नहीं करेगा। (उत्पति 8:20,21)

परमेश्वर के पास मनु□य से दोस्ती बनाए रखने की योजना थी। निर्दो□ा जानवर का लहु इश्ाारा करता है ***वायदा किए हुए मसीह*** की तरफ।

अध्याय 9
अब्राहम

परमेश्वर आम पुरू□ाों और स्त्रियों से बातचीत करता है। उसने अब्राहम से कहा कि वो अपने परिवार को घर और अपनी सुरक्षा को छोड कर नए देश में जाए। उसने उससे कहा चला जा यद्यपि उसे पता नहीं था उसे कहां जाना है। (उत्पति 12:1-3)

अब्राहम परमेश्वर से मिला जो सृ□टकर्ता है। क्यों?

परमेश्वर के पास योजना थी कि वो ***वायदा किए हुए मसीह*** को ले कर आए।

वायदा किए हुए मसीह का रास्ता। आदम > भोत > अनेक पीढ़ियां > नूह > भोम > सात पीढ़ियां >नाहोर > तेरह > **अब्राहम** > इसहाक > याकुब > यहूदा > अनेक पीढ़ियां > दा□द >।

परमेश्वर जानता था कि अब्राहम उसकी सुनेगा और मानेगा। "यहोवा के उस वचन के अनुसार अब्राहम चल पडा। ..."(उत्पति 12:4).

परमेश्वर ने अब्राहम को बडा परिवार देने का **वायदा किया** जिससे वो सब लोगों को आशिा दे।

यह अब्राहम के लिए असम्भव दिखाई पड़ रहा था क्योंकि उसे और उसकी पत्नी के कोई संतान नहीं थी। (उत्पति 15:1-6)

परमेश्वर ने अब्राहम को दोस्ती का उपहार दिया क्योंकि अब्राहम उस पर विश्वास रखता था। (उत्पति 15:6)

परमेश्वर ने अब्राहम से वायदा किया कि उसी के वंश से ***वायदा किया हुआ मसीहा*** आएगा। उसकी औलाद से, यद्यपि उसके अभी तक कोई संतान नहीं है। (उत्पति 12:3)

अब्राहम इस बात को समझ नहीं रहा था कि यह कैसे होगा पर उसने यह विश्वास किया और यह उसकी धार्मिकता गिनी गयी।

क्यिवास परमेय्वर के वचन को मानना है।

ज्यादातर धर्मी लोग यह सोचते हैं कि हम व्यवस्था या नियमों को माने और कुछ चीजों को खाएं और खास तरीकों से प्रार्थना कर के परमेय्वर के साथ धर्मी ठहर सकते हैं। यह परमेय्वर का तरीका नहीं हैं।

हम कभी भी परमेय्वर का प्रेम अपने अच्छे दिखने वाले कामों द्वारा नहीं पा सकते हैं। वह हमसे प्रेम करता है और अपने वचन में क्यिवास के द्वारा अनुग्रह देता है।

यह परमेय्वर की योजना है। हम उसकी दोस्ती और प्रेम को प्राप्त नहीं कर सकते। हम उसके ***वायदे किए हुए मसीह*** को ग्रहण कर सकते है।हम सिर्फ निर्दो□ा जीवन के लहु के उपर भरोसा कर सकते हैं। जिसने हमारे पापों के लिए अपनी कीमत चुकाई।

अब्राहम ने क्यिवास किया परन्तु लम्बा समय बितने के बाद उसे मुय्किल हो रहा था क्यिवास करने के लिए। (उत्पति 15:8)

परमेय्वर ने उसके क्यिवास को मजबूत किया लहू की वाचा बांध के। ऋउत्पति 15:1–17ऋ, ऋइब्रानियों 6:13ऋ

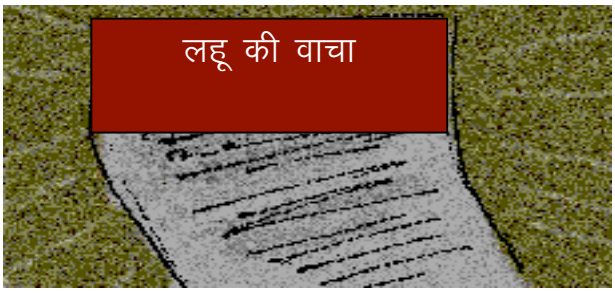

परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि जानवर की गर्दन के बीच मे काटना और लहू बहने के लिए स्थान बनाना।

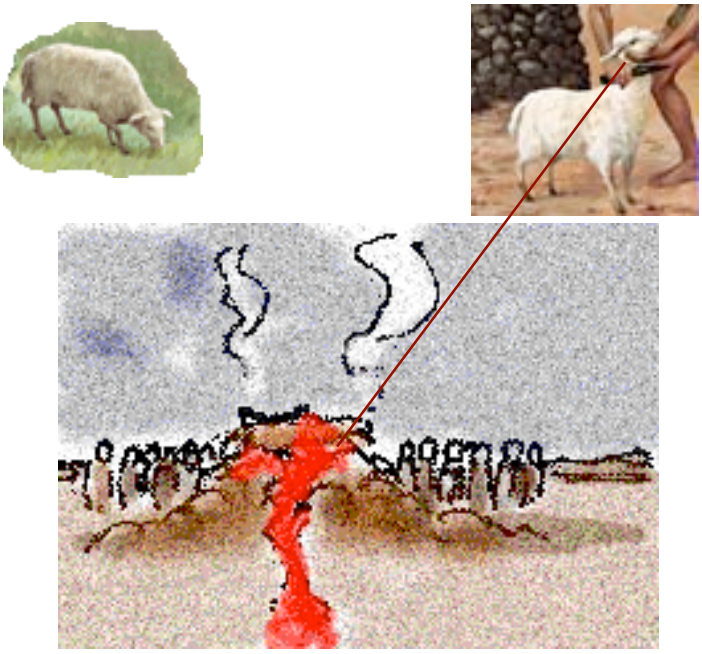

यह वाचा एक और चिन्ह का *वायदा किए हुए मसीह* का। याद रखिए परमेश्वर ने पाप का दण्ड मृत्यु निर्धारित किया है। परन्तु वह मनु□य से इतना प्यार करता हे कि उसने उसके मृत्यु के दण्ड को निर्दो□ा के उपर स्थानान्तरण कर दिया है।

अध्याय 10
अब्राहम और इसहाक

परमेश्वर की योजना है कि मनु□य के साथ सम्बन्ध को पुर्नस्थापित करे। उसकी योजना यह कि वह मनु□य के पाप को किसी निर्दो□ा के उपर स्थानान्तरित करें।

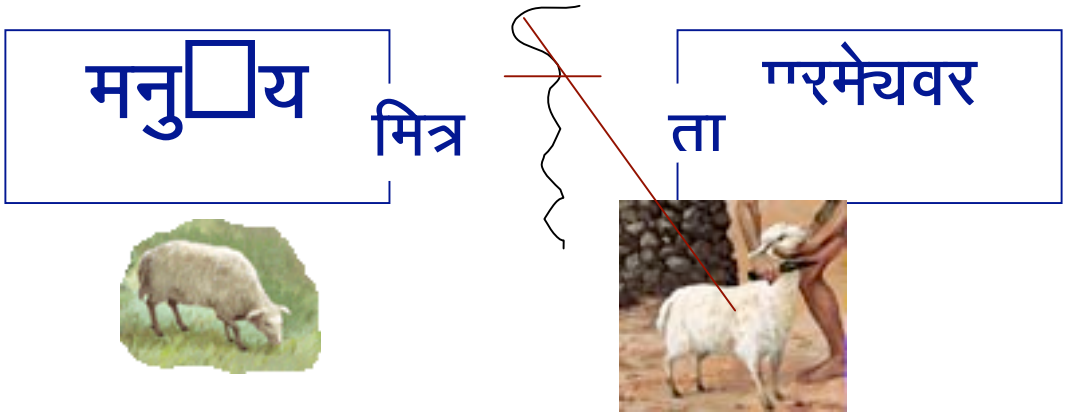

अभी तक परमेश्वर ने निर्दो□ाो को इस्तेमाल किया और मनु□य के पाप के लिए दो□ा रहित पशु के लहू को बहाया। पर यह हमेशा के लिए उपाय नहीं था। यह तो सिर्फ यह चिन्ह था जो ***वायदा किए हुए मसीह की और इशारा*** करती है।

परमेश्वर ने अब्राहम से वायदा किया था कि ***वायदा किया हुआ मसीह*** उसके बेटे इसहाक से आएगा।

(उत्पति 17:19)

वायदा किए हुए मसीह का रास्ता। आदम > भोत > अनेक पीढ़ियां > नूह > भोम > सात पीढ़ियां >नाहोर > तेरह > **अब्राहम** > इसहाक > याकुब > यहूदा > अनेक पीढ़ियां > दा□द >।

"इन बातों के पश्चात ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने इब्राहीम की परीक्षा ली और उस से कहा, इब्राहीम।' उसने कहा देख मै यहां हुँ। और उसने कहा अपने पुत्र को, हॉ अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिस से तू प्रेम करता है, साथ लेकर मोरि□यहा देश को जा; वहां एक पहाड़ पर, जिसे मैं तुझे बता□गा,उसे होम बलि करके चढ़ाना।" (उत्पति 22:1,2)

क्यों परमेश्वर अब्राहम से ऐसा करने के लिए पूछेगा? क्यों वो अपने वाचा बांधे हुए मित्र से अपने बेटे की बलि देने के लिए कहेगा?

"अतः इब्राहीम बड़े सबेरे उठा और अपने गधे पर काठी कस कर उसने दो सेवकों और अपने पुत्र इसहाक को साथ लिया, और होमबलि के लिए लकड़ी चीरी और उठकर उस स्थान के लिए प्रस्थान किया जिसके वि□ाय में परमेश्वर ने उससे कहा था। तीसरे दिन इब्राहीम ने अपनी दृ□ट उठाई तो उस स्थान को दूर से देखा। इब्राहीम ने अपने सेवकों से कहा, "तुम गदहे के पास यहीं ठहरो, और मैं और यह लड़का वहां जाकर आराधना करेंगें और फिर तुम्हारे पास लौट आएंगे।" और इब्राहीम ने होमबलि की लकड़ी अपने पुत्र इसहाक के □पर लादी, और बाग और छुरी अपने हाथ में ले ली। और वे दोनों साथ साथ आगे चल दिए। (उत्पति 22:3-6)

"परन्तु इसहाक ने अपने पिता इब्राहीम से कहा, "पिताजी!" उसने कहा, "हां, बेटा?" वह बोला देख, आग और लकड़ी तो है पर होमबलि के लिए मेमना कहां है?" इब्राहीम ने कहा, "बेटा, होमबलि के लिए मेमने का प्रबन्ध परमेश्वर स्वयं ही करेगा।" अतः वे दोनों साथ साथ आगे बढ़े। (उत्पति 22:7,8)

परमेश्वर ने इसहाक के बदले मेमने का प्रबंध किया। यह एक और चिन्ह था ***वायदा किए हुए मसीह*** का कि परमेश्वर खुद ही उसका उपाय करेगा। (उत्पति 22:8)

"परन्तु यहोवा के दूत ने स्वर्ग से उसे पुकार कर कहा, इब्राहीम है इब्राहीम! उसने उतर दिया, देख, मैं यहॉ हूँ। उसने कहा, उस लड़के की ओर हाथ न बढ़ा, और न ही उसे कोई हानि पहुँचा। मैं अब जान गया हूँ कि तू परमेश्वर से डरता है, क्योंकि तु ने मेरे लिए उपने पुत्र अर्थात् अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा। (उत्पति 22:11,12)

“तब इब्राहीम ने आंखे उठाकर पीछे देखा कि एक मेढ़ा अपने सींगों से झाड़ी में फंसा हुआ है; इब्राहीम ने जा कर मेढ़े को पकडा और अपने पुत्र के स्थान पर उसको होमबलि चढ़ाया। और इब्राहीम ने उस स्थान का नाम यहोवा यिरे रखा।इसलिए आज तक यह कहा जाता है कि यहोवा के पर्वत पर उपाय किया जाएगा। (उत्पति 22:13,14)

अध्याय 11
यूसुफ

अब्राहम, इसहाक, और याकूब कनान में रहें (जो आज इस्राएल कहलाया जाता है) उसके भाइयों ने यूसुफ को जो याकूब का बेटा था बेच दिया था दासत्व के लिए। वह मिस्र में दास के रूप में पहुंचा, किसी तरह से बाद में वो फिरोने के नीचे मिस्र का मुख्य गर्वनर बन गया।

यूसुफ परमेश्वर की नजदीकता में रहा और परमेश्वर ने उसे इस्तेमाल किया कि वह अपने परिवार के लिए रास्ता बनाए, ताकि इस्राएली लोग जीवित रहें। याद रखिएगा की वायदा किया हुआ मसीहा इस परिवार से ही होके आना है।

मिस्र। याकूब और उसका परिवार जब कनान में थे तो वहां अकाल पड़ा और वो और उसका परिवार मिस्र में आ गए। उस समय में उसको परिवार में सिर्फ 70 लोग ही थे।

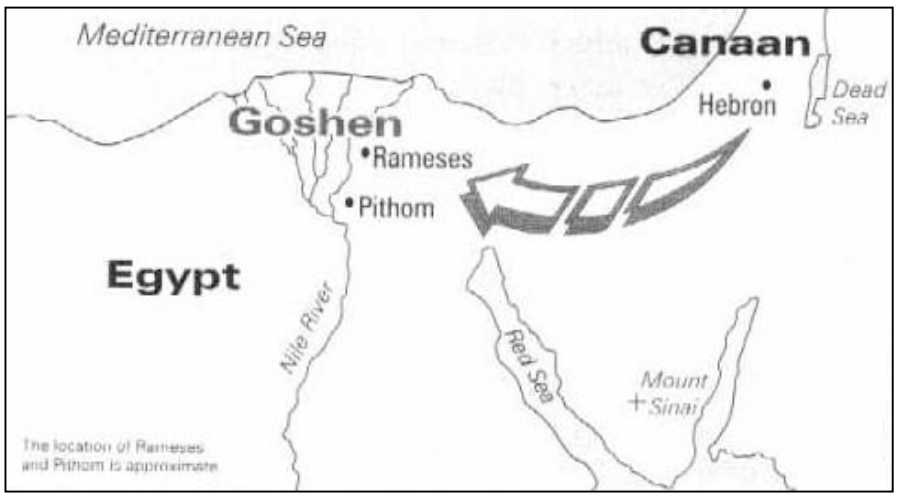

जब याकूब के भाई मिस्र में पहुंचे। वो यूसुफ की दया पर थे जिसको उन्होंने दास होने के लिए बेच दिया था। पर यूसुफ ने उन्हें माफ कर दिया। (उत्पति 45:4-8)

यूसुफ के भाईयों द्वारा उसके □पर बुरा करने के बाबजूद, कितनी अद्भुत बात है कि परमेश्वर ने उस बुराई को भलाई में बदल दिया। यदि हम परमेश्वर के नजदीक में है तो हमारी बुरी परिस्थिति भी उसकी उक्ताम योजना में हमारे जीवन के लिए अच्छी बन जाएगी।

उन्हे कनान की भूमि के वायदे के रूप में दिया था न कि गोय्योन को जो मिस्र में है। फिर भी परमेश्वर ने अपना वायदा नहीं भूला था। कनान में आकाल आने से 70 लोगों के वहां से जाने से पहले परमेश्वर ने बहुत पहले याकुब को बताया था, सुन मैं तेरे साथ हूँ जहां कहीं तू जाएगा, मैं तेरी रक्षा करूंगा और तुझी को इस देश मे लोटा ले आ□गा। क्योंकि जो प्रतिज्ञा मैंने तुझ से की है जब तक उसे पूरी न कर लू तब तक उसे न छोडूगां।" (उत्पति 28:15)

परमेश्वर अपने वायदे को पूरा करता है!

परमेश्वर ने परिवार को जिन्दा रखा जिस के द्वारा ***वायदा किया हुआ मसीह*** आएगा।

वायदा किए हुए मसीह का रास्ता। आदम > भोत > अनेक पीढ़िया > नूह > भोम > सात पीढ़ियां > नाहोर > तेरह > अब्राहम > इसहाक > याकुब > यहूदा > **अनेक पीढ़ियां** > दा□द >।

अध्याय 12
मूसा

जब याकूब और उसके 12 बेटे मिस्र में व्यवस्थित हो गए उस समय मिस्र में सिर्फ 70 इब्रानी लोग थे। अब कई सौ सालों के बाद $2^{1/2}$ मिलियन इब्रानी लोग थे। युसूफ ने मिस्र के राजा फिरोन के समय में अधिक अनुग्रह पाया और आनन्द उठाया। और सौ साल बाद मिस्री लोग इब्रानियों को दास के रूप में इस्तेमाल करने लगे। (निर्गमन 1:8-11)

क्या आप ने कभी महसुस किया है कि आप दासत्व में थे? क्या आप ने कभी महसूस किया है कि जीवन आप को ''मुश्किल बन्धुआई'' के द्वारा दुःख दे रहा है।?"

परमेश्वर इन भावनाओ की चिन्ता करता है। हम और भी अधिक सीखेंगे कि आप के प्रति परमेश्वर की गहरी रूची है और उसकी इच्छा है कि आप के हर प्रकार के बन्धन से दासत्व से और बन्धुआई से आज़ादी मिले। परमेश्वर का महान उद्देश्य आप के लिए यह है कि वो आप को स्वतंत्र व्यक्ति बनाए।

परमेश्वर ने मूसा को चुना कि वो मिस्र के राजा फिरोन के पास जाए ताकि वे उससे उस का सामना करें ताकि वो उसके लोंगो को जाने दे।(निर्गमन 5:1)

" परन्तु फिरोन ने कहा यहोवा कौन है कि मैं उसकी बात मानकर इस्राएलियों को जाने दूं? मैं यहोवा को नहीं जानता और मैं इस्राएलियों को नहीं जाने दूंगा।" (निर्गमन 5:2)

ध्यान दीजिए कि फिरोन को परमेश्वर कौन है यह पता नहीं था।मिस्र मे अनेक तरह के देवी देवताओं की पूजा होती है। सूर्य का देवता, तूफान का देवता, नील नदी, यहां तक की फिरोन भी मिस्र के लोगो के लिए देवता के समान था।

बहुत से लोग फिरोन की तरह हैं। वो परमेश्वर को जानना नहीं चाहते हैं जो सृ□ट कर्ता है। क्योंकि वे अपने नियन्त्रण व साम्थर्य को खो देंगे और उन्हें अपने जीवनों को भी परमेश्वर को समर्पित करना पड़ेगा।

"और इस्राइली जिन्हें मिस्री लोग दासत्व में रखते हैं उनका कराहना सुनकर मैंने अपनी वाचा को स्मरण किया है।" (निर्गमन 6:5)

परमेश्वर वायदा किये हुए
मसीह को याद कर रहा था।

ध्यान दीजिए की परमेश्वर अपनी वाचा के प्रति समर्पित है उसके लहू की वाचा के प्रति। यह वो वाचा है जो उसने अब्राहम, इसहाक, याकूब के साथ बांधी थी।

इसलिए इस्रालियों से कह मैं यहोवा हूँ और मैं तुमको मिस्रियों के बोझो के नीचे से निकालूगा। मैं तुमको उनके दासत्व से छुड़ाउगा मैं अपनी भुजा बढ़ाकर और न्याय के महान् कार्य करके तुम्हें छुड़ा लूंगा। (निर्गमन 6:6)

ध्यान दीजिए की परमेश्वर कैसे अपने लोगों के प्रति सुरक्षा देने वाले के रूप में है। इस का यह मतलब नहीं कि सिर्फ इस्राएल के लोग ही सिर्फ जीवित परमेश्वर को जाने व उसके पीछे चले। पर इस का यह मतलब है कि दूसरों को भी लहू की वाचा में जो उसने इस्राएल के लोगो से बांधी थी विश्वास द्वारा वो भी उसके पास आएं।

परमेश्वर ने सब लोगों के लिए एक उपाय किया कि अगर वो पापी हैं तो भी **वो लोग उसके पास आएं।** परन्तु उसे एक निर्दो□ा को उसके लहू की बलि चढ़ाना था जिससे मित्रता का सम्बन्ध पुनः स्थपित हो जाए।

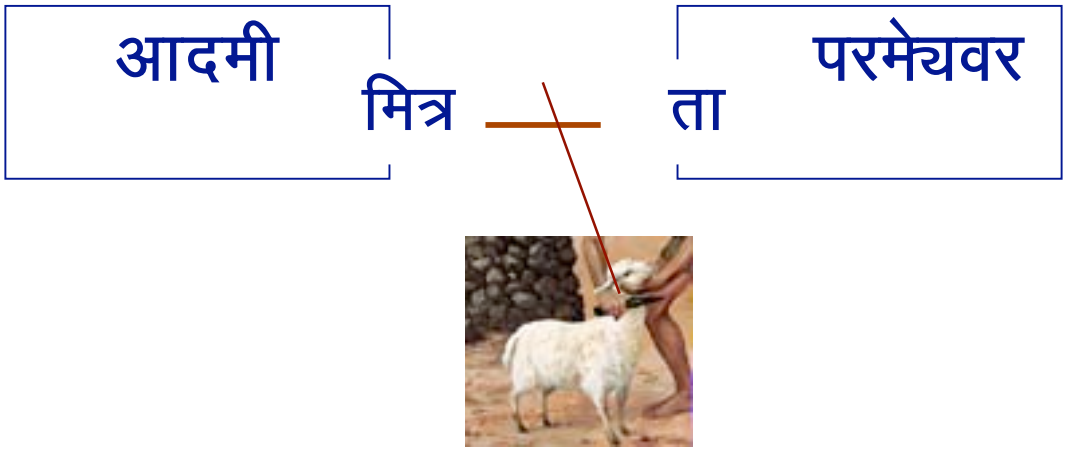

परमेश्वर ने मिस्र में अनेक महामारियों को आने दिया। अन्तिम वाला कि मृत्यु बाला दूत मिस्र में आया और उसने मिस्रीयों के पहलौठों को मार दिया। परन्तु परमेश्वर ने मुसा को बताया था कि उसे कैसे अपने लोगों को बचाना है।

1.मेमने को लो। "तब यहोवा ने मिस्र देश में मूसा और हारून से कहा, यह महीना तुम्हारे लिए आरम्भ का महीना हो; यह तुम्हारे लिए व□ा का प्रथम महीना ठहरे। इस्राएल की समस्त मण्डली से कहना कि इस महीने के दसवें दिन तुम में से प्रत्येक जन अपने पुर्वजों के घरानों के अनुसार घर पीछे एक एक मेमना ले।" (निर्गमन 12:1-3)

2. एक नर मेमना जो निर्दो□ा हो। तुम्हारा मेमना निर्दो□ा और एक व□ा का नर हो। उसे तुम चाहे भेड़ों में से या बकरियों में से ले सकते हो। परमेश्वर निर्दो□ा मेमने की मांग करता है। (निर्गमन 12:5)

3. मेमने का वध कर दो। (निर्गमन 12:6)

4. उसके लहू को दरवाजे के दोनों अंलगो तथा चौखट के उपरी भाग पर लगाएं। (निर्गमन 12:7)

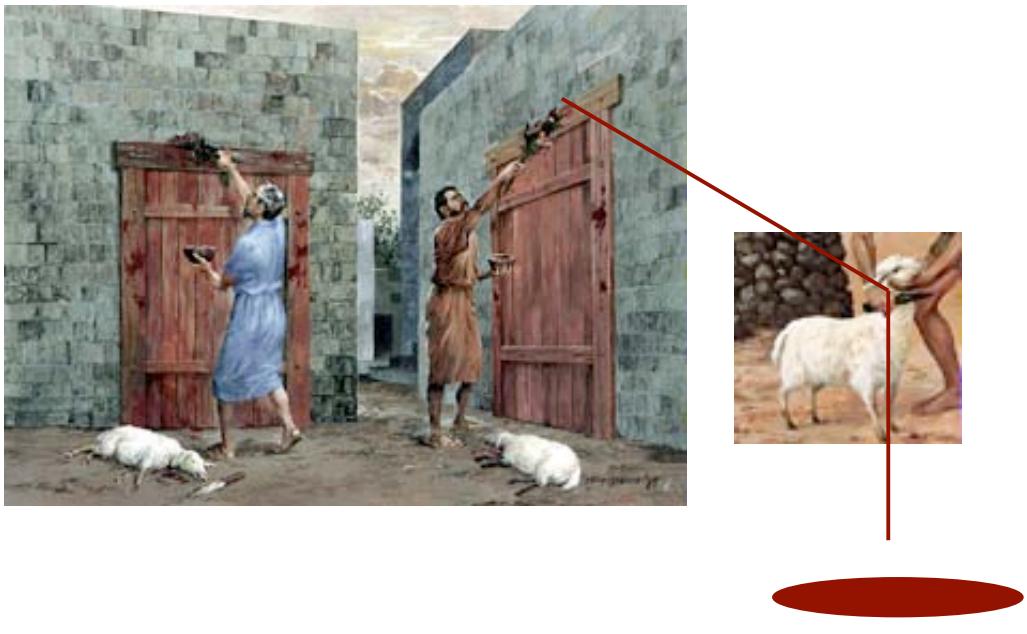

5. भोर होने तक तुम में से कोई अपने घर के दरवाज़े से बाहर न निकलना। (निर्गमन 12:22)

6. उसकी कोई हड्डी न तोड़ना। वह एक ही घर मे खाया जाए; उसमे का कुछ भी मांस तुम घर के बाहर न ले जाना और न ही तुम उसकी कोई भी हड्डी तोडना। (निर्गमन 12:46)

7. "मैं तुम्हें छोडता जा□गा/या लांग कर चला जा□गा।" "क्योंकि उस रात्रि को मैं मिस्र देश से होकर निकलुंगा और मिस्र देश के क्या मनु□य और क्या पशु दोनो के पहलौठों को मारूंगा तथा मिस्र के सब देवताओं को भी दण्ड दूंगा–मैं यहोवा हूं। और जिन घरों में तुम रहते हो उन पर वह लहू तुम्हारे निमित चिन्ह ठहरेगा, और मैं उस लहू को देख कर तुम्हें छोडता चला जाउंगा, और जब मैं मिस्र देश को मारूंगा तो वह विपति तुम पर न पड़ेगी और न ही तुम नाश होगे।" (निर्गमन 12:12,13)

इन बातों का इन लोगों को शायद मतलब न समझ आया हो, क्योंकि यह लोग लहू की वाचा से अनभिज्ञ थे और वायदा किए हुए मसीह से भी अनभिज्ञ थे। फिर भी इन्होने इसे माना, उन्होने परमेश्वर के वचन के उपर पूर्ण रूप से विश्वास किया।

सभी इब्री लोग बच गए और मिस्र के पहलोठे बच्चे और यहां तक की जानवरों के पहलोठे बच्चे भी मारे गए।

परन्तु लहू ने परमेश्वर के लोगो को सूरक्षित रखा।

आप ने इस परिस्थिति में क्या किया होता?

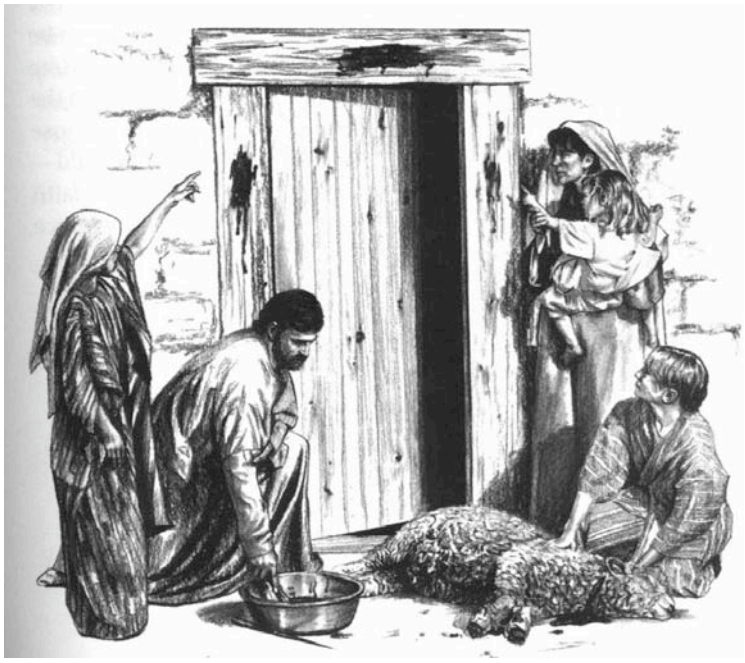

अध्याय 13
मूसा के बारे में और

इब्री बच गये परन्तु फिरोन ने उनका पीछा करने का सोचा। इब्रानी लोग भी लाल समुन्द्र तक ही जा पाए थे। इस तरह वो फंस गए। (निर्गमन 13:17,18), (निर्गमन 14:5)

"तब मिस्रियों ने फ़िरोन के सब घोडों और रथों, उसके सवारों और उसकी सेना सहित उनका पीछा किया, और उन्हें पी–हाहीरोत के पास बाल–सिपोन के सामने समुद्र के किनारे जहां उनकी छावनी थी, जा पकड़ा।"(निर्गमन 14:9)

"परन्तु मुसा ने लोगो से कहा, डरो मत! खड़े खड़े यहोवा के उद्धार को देखो जो वह आज तुम्हारे लिए करेगा; क्योंकि जिन मिस्रियों को तुम आज देख रहे हो, उन्हें फिर कभी न देखोगे।" (निर्गमन 14:13)

परमेश्वर ने मुसा से अपनी लाठी लाल समुन्द्र के उपर उठाने के लिए कहा जब मूसा ने ऐसा किया तो लाल समुन्द्र दो भाग में हो गया।

"तब इस्राएली ममुद्रके मध्य सूखी भूमि से होकर गए और जल उनकी दाहिनी और बाई ओर दीवार के समान था।" (निर्गमन 14:22)

"तब मिस्रियों ने उनका पीछा किया और फ़िरोन के सब घोड़े, रथ और घुड़सवार उनका पीछा करते हुए समुद्र के मध्य चले गए।" (निर्गमन 14:23)

परमेश्वर ने मिस्रियों को इब्रानी लोगों के पीछे लाल समुद्र के रास्ते से जाने के लिए मज़बूर किया। (निर्गमन 14:27,28)

"इस प्रकार उस दिन यहोवा ने इस्राएलियों को मिस्रियों के हाथ से छुड़ाया और इस्राएलियों ने मिस्रियों को समुद्र तट पर मरे पड़े देखा। जब इस्राएलियों ने मिस्रियों के विरूद्ध यहोवा के महासामर्थी भुजबल को देखा तब उन्होने यहोवा का भय माना और उसके दास मूसा पर क्यिवास किया। तब मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा के लिए यह गीत गाया, और कहाः मैं यहोवा के लिए गीत गा□गा, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ों को सवारों सहित उसने समुद्र में पटक दिया है।" (निर्गमन 14:30-15:1)

परमेश्वर के द्वारा अपने लोगों को अपने भात्रुओं के हाथ द्वारा बचाने की पूरी कहानी, परमेश्वर आज हमें कैसे हमारे भात्रुओं से बचाता है से मिलती है।

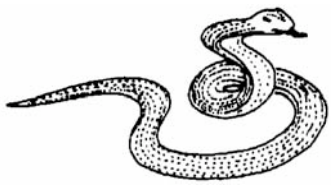

फिर भी– याद रखिए पिछले अध्याय में हमने बात की थी कि कौन हमारा असली भात्रु है। अगर परमेश्वर की व उसके वचन को माने और अगर हम लहू का आदर करे जो ***वायदा किए हुए मसीहा*** के बारे में प्रकट करता है तो वह हमे हमारे असली भात्रु से बचाएगा।

अध्याय 14
वाचा का नवीनीकरण

परमेश्वर ने अपने भवि□यवक्ताओं के द्वारा कई सौ साल पहले बातचीत की। कई लोग परमेश्वर के बारे मे भी भूल गए हैं। **इस्राएल और परमेश्वर के लोग** रोमी लोगो के भासन के अधीन थे।

लोग किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ रहें थे जो उन्हें रोमी भासन से आज़ाद करें। असल में उनका भात्रु रोमी भासन नहीं **भौतान** था कोई भी साधारण आदमी हमें भौतान/पाप/मृत्यु के चुंगल से आज़ाद नहीं कर सकता।

परमेश्वर खुद ही महान छुटकारा देने वाला है,*वायदा किया हुआ छुड़ाने* वाला। मैं हां मैं ही यहोवा हूँ और मुझे छोड कोई उद्धार कर्ता नहीं।" (यशायाह 43:11)। **क्या ही आश्चर्य है!** कैसे परमेश्वर खुद बचाने वाला हो सकता है? बचाने वाला या ***वायदा किया हुआ मसीहा,*** मेमना हो सकता है!

लोगो को यह सोचना पसंद है कि वही सबसे सामर्थी और महान/मुख्य इंसान है। भौतान चाहता है कि लोग सोचे ताकि वो परमेश्वर से न मिले जो उनको बचाने वाला है। प्रभु परमेश्वर ही सिर्फ उद्धार कर्ता है।

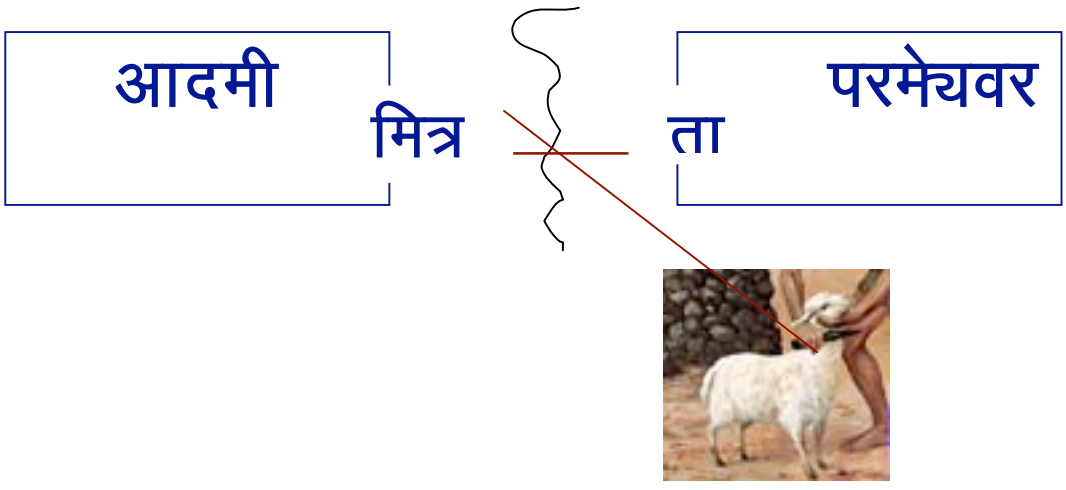

कितने सूर्य पृथ्वी को रोशनी देते हैं? सिर्फ एक! परमेश्वर ने कितने वायदा किए हुए मसीह को भेजने का वायदा किया? सिर्फ एक! उसने अलग–अलग छुटकारा देने वालो को भेजने का वायदा नहीं किया था, एक हमारे लिए दूसरा संसार के दूसरे हिस्से के लोंगों के लिए।

यह भौतान का झूठ है।

एक बडी समस्या यह है कि यह वायदा किया हुआ मसीहा परमेश्वर खुद ही होगा और वायदा किया हुआ मसीहा ही खुद ही अपना लहू बहाएगा मनु□य के पाप के लिए।

तो प्रश्न यह है अगर वो परमेश्वर है तो वह कैसे मारा जा सकता है?

क्या बाईबल का परमेश्वर इतना कमज़ोर है कि वो मारा जा सके? नही, कोई भी ऐसा नहीं जो परमेश्वर को हराए। वो मारा नहीं जा सकता है।

आप देख सकतें है कि इन सब को समझ देने के लिए हमारे पास इन गम्भीर प्रश्नों के उतर हैं।

थोडा रूकिए बाईबल इन सब प्रश्नों का उतर देगी!

अध्याय 15
मरियम

एक स्वर्गदूत एक यहूदी स्त्री मरियम से मिला।

"तब स्वर्गदूत ने उस से कहा, 'है मरियम, भयभीत न हो क्योंकि तुझ पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है। देख, तू गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और तु उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा। प्रभु परमेश्वर उसके पिता दा□द का सिंहासन उसे देगा।" (लूका 1:30-32)

क्या आप को याद है कि वायदा किया हुआ मसीह दा□द के परिवार से होगा? मरियम और यूसुफ दोंनो ही दा□द के खानदान से है।

वायदा किए हुए मसीह का रास्ता। आदम > भोत > अनेक पीढ़िया > नूह > भोम > सात पीढ़ियां > नाहोर > तेरह > अब्राहम > इसहाक > याकुब > यहूदा > **अनेक पीढ़ियां** > दा□द >। अनेक पीढ़िया > यीशु।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि मरियम ने क्या सोचा होगा? स्वर्गदूत ने उसे बताया कि वो परमेश्वर के पुत्र को जन्म देगी!

यह और भी आश्चर्चय की बात है कि मरियम की किसी भी पुरू□ा से कभी कोई सम्बन्ध नहीं था!

"मरियम ने स्वर्गदूत से कहा यह कैसे हो सकता है, क्योंकि में तो अभी कुवारी ही हूँ।" (लूका 1:34)

"स्वर्गदूत ने उस से कहा पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान का सामर्थ्य तुझ पर आच्छादित होगा । इसी कारण वह पवित्र पु जो उत्पन्न होगा। परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा क्योंकि परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव न है।" (लूका 1:35,37)

क्या आप को याद है कि हमारी इस पूरी कहानी में परमेश्वर ने सभी लोगो को निर्दो□ा और सिद्ध मेमने को इस्तेमाल करने के लिए कहा है?

परमेश्वर ने उन्हें बताया था कि यह मेमना ***वायदा किए हुए मसीह*** की और संकेत करेगा।

रहस्य की गुप्त बात यहां है। ***वायदा किए हुए मसीह*** का रहस्य!

1. ***वायदा किया हुआ मसीह*** सिद्ध होने के लिए वो आदम के पापी स्वभाव के वंश में से नहीं होना चाहिए। यद्यपि आदम के बाद भी अच्छे लोग हुए, उन्हें लहू के वलिदान द्वारा अच्छा बनाया गया, सिद्ध मेमने या जानवर के लहू के द्वारा ही हो सका।

2. **यीशु आदम के वंश से नहीं हो सकता** क्योंकि मरियम के किसी के साथ भी भारीरिक सम्बन्ध नहीं थे। स्वर्गदूत ने परमेश्वर के वचन को उसके गर्भ में कहा और वह नवजात बच्चे यीशु से गर्भावित हुई।

3. **यीशु पूरी रीति से मनु□य था** क्योंकि मरियम उसकी मां बनी थी।परन्तु वह परमेश्वर भी है क्योंकि परमेश्वर उसक पिता था। परमेश्वर ने अपने आपको मानव भारीर मे हो कर प्रकट किया।

"आदि मे वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही (यीशु, वचन) आदि में परमेश्वर के साथ था।" (यूहन्ना 1:1,2).

"और वचन [यीशु] जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण था, देहधारी हुआ, और हमारे बीच में निवास किया और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना 1:14)

यदि परमेश्वर सारे संसार से बोल सकता है और हमारा संसार उसके भाब्द से बना है, तो वह अक्षय अपने बेटे से हमारे संसार के बारे में अपने भाब्द से बोल सकता है।

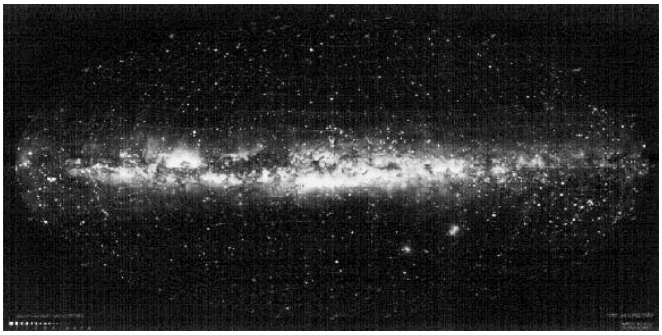

बच्चे का भारीरिक पिता नहीं हो सकता। अब यह हमें समझ में आती है। अदन की वाटिका में बहुत पहले, परमेश्वर ने हव्वा को वायदा किया था कि उसके वंश से वायदा किया हुआ मसीह आएगा न कि दोनों आदमी और औरत के द्वारा। परमेश्वर ने कहा था कि हव्वा का वंशज भौतान को न□ट करेगा।

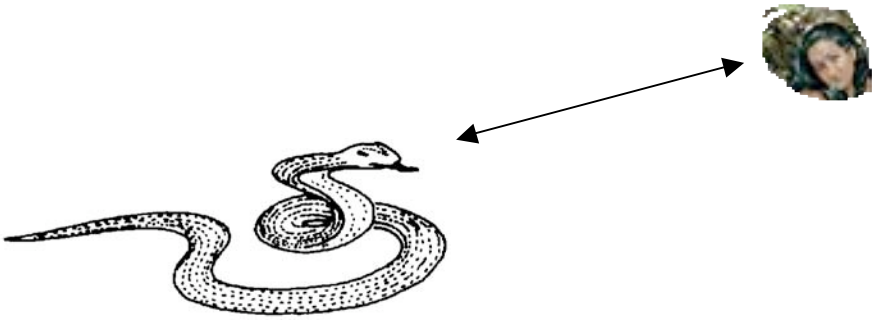

मरियम के बच्चे को जन्म देने से पहले सरकार ने घो□णा की कि जनगणना के लिए सब लोग अपने अपने नगर में आएं। उन को बैतलहम को लौटना पड़ा जो हज़ारो साल पहले राजा दा□द का घर था।

इसलिए यीशु का जन्म बैतलहम मैं हुआ। उनको सराय में कोई जगह नहीं मिली इसलिए गौशाला में जहां जानवर थे वहां रहना पड़ा। वायदा किए हुए मसीह को जन्म लेने के लिए यह एक उपयुक्त स्थान नहीं लगता है, पर यह परमेश्वर की योजना थी।

मीका भवि□यवक्ता ने मीका 5:2 में कहा है वायदा कियाहुआ मसीह बैतलेहम में पैदा होगा। परमेश्वर पहले से ही शुरूआत से लेकर अन्त तक सब जानता था!

अध्याय 16
यीशु

यीशु मिस्त्री के रूप में मेंहनत करता हुआ बड़ा हुआ।

यीशु ने भौतान के द्वारा लोगों को जो दुःख तकलीफ मिलता है देखा।

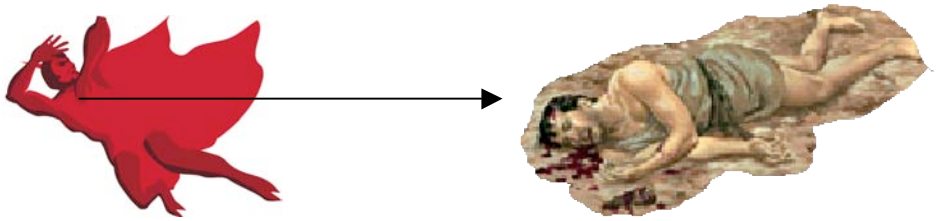

यीशु ने परमेश्वर के प्रेंम को गरीबों और दुखियों के प्रति दिखाया। उसने मनु□य को भेडों के समान जो बिना चरवाहे के है ऐसे देखा।

यीशु ने परमेश्वर के सामर्थ्य को भौतान के खिलाफ इस्तेमाल किया ताकि वो दुखियों की सहायता कर सके।

यीशु ने एक आदमी को दु□टआत्मा से ग्रसित देखा। यीशु ने उस मनु□य से दु□टात्मा को अपने भाब्दों से ड़ांट कर निकाल दिया। भौतान जानता है कि यीशु कौन है। उसने ऐसे परमेश्वर का पवित्र जन कर के कहा है। उसने यीशु की आज्ञाओं को माना। और आदमी उससे स्वतन्त्रं हो गया! (मरकुस 1:23-28)

दु□टआत्माएं आज भी यीशु के भाब्दों से भाग जातीं हैं। वे और किसी चीज से नहीं भागते हैं।

यीशु ने कोढ़ी को भाुद्ध किया। वहां पर कोढ़ी का कोई इलाज़ नहीं था, पर यींशु ने यह चमत्कार किया। (मरकुस 1:40-45)

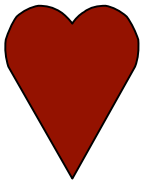

यीच्यु मसीह ने सुसमाचार सुनाया। सुसमाचार का मतलब अच्छा समाचार होता है। सुसमाचार यह है कि यीच्यु वायदा किया हुआ मसीहा के रूप मे आया लोगों को भौतान की ताकत से छुडाने के लिए।

यीच्यु ने कहा कि भौतान से बचने का केवल एक ही तरीका है कि परमेच्यवर की बात से सहमत हो और उसके सुसमाचार पर क्यिवास करें ।

नीकुदेमुस नाम का एक आदमी यीच्यु के पास रात को आया यह पुछने के लिए कि वह यह चमत्कार कैसे करता है। (यूहन्ना 3)

यीच्यु ने कहा कि इसको सही से समझने के लिए नए जन्म की आक्ययकता होती है, पूर्ण रीति से नये जन्म की आक्ययकता होती है।

ऐसा कहने से यीच्यु का क्या तात्पर्य था? क्या यह किसी प्रकार की धार्मिक बातचीत थी? नहीं!

यीशु बाईबल के इतिहास की तरफ इशारा कर रहे थे, जो हमने पहले पढ़ी है। जब आदम ने पाप किया और परमेश्वर की आत्मा आदम को छोड़ कर चली गयी थी।

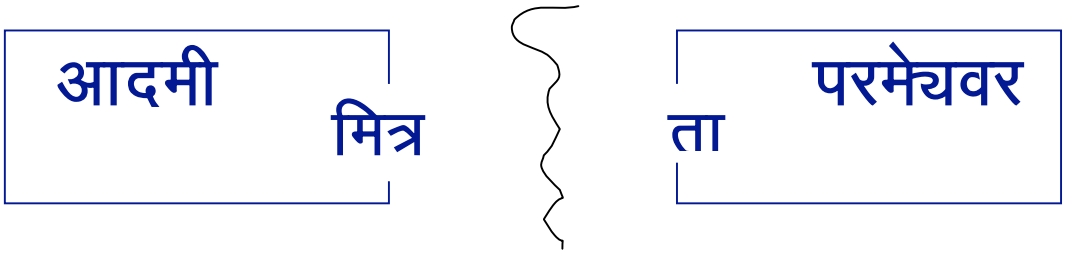

नया जन्म मनु□य के अन्दर परमेश्वर की आत्मा को उसके अन्दर ले आएगा।

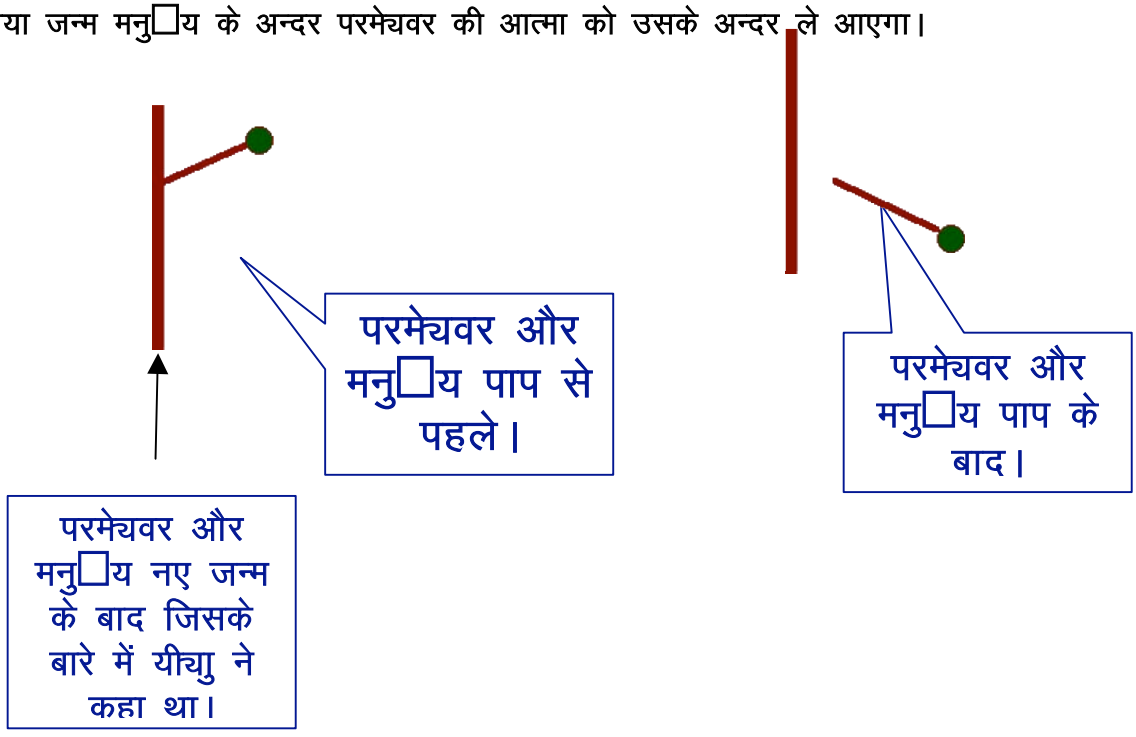

यीशु नें नीकुदेमुस का समझाया कि परमेश्वर ने पापी मनु□य के साथ इतना प्रेंम किया कि परमेश्वर ने उसे भेज दिया एक वायदा किए हुए मसीहा के रूप में

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेंम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करें वह नाश न हो बाल्कि आन्नत जीवन पाएं।" (यूहन्ना 3:16)

यीशु ने सिर्फ अच्छे ही काम किए। उसने कभी किसी को दुःख नहीं दिया। उसने यहां तक कभी भी बुरे रोमन साम्राज्य के खिलाफ नहीं बोला। उन्होने उसे कभी नहीं पकड़ा जैसे दूसरेा को वो पकड़ते थें क्योंकि उन्हे उस से कोई खतरा नहीं था।

उसने लोगों को अधिकारियों की आज्ञा मानने के लिए बताया, टेक्स की भरपाई करने के लिए कहा,। लोगों के साथ एक मील की बजय दो मील साथ अधिक आगे जाना/सहायता करना वा सेवक बनना सिखाया।

यीशु ने माफी के बारे में भी सिखाया। उसने अच्छा जीवन जीने के फायदे के बारे में बताया। उसने लोगों को बताया की वो उनको अच्छा जीवन जीने के लिए सामर्थ्य दे सकता है।

धार्मिक और कुछ सामर्थी लोगो ने यीशु को गलत समझा। उन्होनें उसके बारे कें झूठ बोला। उसने उन्हें भी माफ किया।

क्यों यीशु ने राजा जैसा व्यवहार नहीं किया? क्यों उसने अधिकतर मेमने की तरह ही खुद को प्रदर्शित किया?

यीशु अच्छे काम ही करते गए।

उसने जो अपने आपे में नहीं था उसके अन्दर से दु□ट आत्मा को निकाला। (मरकुस 5:1-18)

यीशु ने एक लकवे के रोगी को चंगा किया। (मरकुस 2:1-12)

यीशु ने उस औरत को क्षमा किया और नई आशा को पाया जिसने अपना जीवन पांच पत्तियों के पिछे बरबाद किया और अभी वो भाादी भुदा नहीं है। (यूहन्ना 4:1-42) वह आज भी नई आशा हमको देता है।

यीशु ने तूफ़ान को अपने भाब्दों से रूका दिया। (मरकुस 4:35-41) यीशु आज भी आप को तुफानों को भाांत कर सकता है। यीशु सर्वशाक्ति मान है! यीशु स्वंय प्रमेश्वर है!

यीशु ने 5000 लोगों को 5 रोटी और 2 मछली से खाना खिलाया। यीशु ही है जिसने पूरे ब्राहमाडं को बनाया। वो आज भी आप के जीवन में चमत्कार कर सकता है। यीशु दुखित लोगों की सुधि लेता हैं।

घमंड़ी धार्मिक लोग फरीसी कहलाए जाते थें। वे पाखाण्डी थे। उन्होने अपने आप को अच्छा दिखाने के लिए बहुत कुछ किया।परन्तु उनके हृदय अन्दर से दु□ट थे।

यीशु ने इन लोगो के खिलाफ में कहा। क्यों? (मरकुस 7:1-23)

यीश्यु जानते थे कि धर्म मनु□य की सहायता नहीं कर सकतें हैं।

कोई भी धार्मिक कार्य समस्या का समाधान नहीं कर सकता है।

आदमी

मित्र

भाराव न पियो
सिगरेट न पियो

अच्छा कार्य

नियम को मानों

बपतिस्मा

चर्च में जाना

ता

परमेश्वर

परमेश्वर के पास योजना है।

अध्याय 17
नर्क

बहुत से लोग विश्वास नहीं करते है कि नर्क भी है। कुछ कहते हैं यदि परमेश्वर प्रेम है तो वों क्यों लोगों को नर्क मे भेजेगा?

परमेश्वर लोगों को नर्क में नहीं *भेजता* है। परमेश्वर ने नर्क विरोध करने वाले स्वर्गदूतो, दु□टात्माओं और भौतान के लिए बनाया है हर एक के पास चुनाब है कि वो स्वर्ग या नर्क में जाए। यदि मनु□य परमेश्वर को मु□त उपहार, वायदा किए हुए मसीह को चुनता है तो वो स्वर्ग मे जाएगा अगर वो परमेश्वर के मुफत उपहार को नहीं चुनता है तो वो भौतान व नर्क को चुन रहा है।

लोग चुनाव करतें हैं परमेश्वर नहीं। परमेश्वर ने नर्क बनाया ताकि दु□ट लोग और भौतान उसके परिवार को हमेश्याा के लिए दुःख न दे। नर्क एक जेल की तरह है; यह निर्दो□ाों लोगों को बुरे लोगो से बचाने के लिए है।

"एक धनी पुरू□ा था जो सदा बैंजनी वस्त्र व मलमल पहिना करता था और प्रतिदिन धूमधाम व बड़े सुख–विलास से रहता था। और लाज़र नाम का एक कंगाल व्यक्ति घावों से भरा हुआ उसके फाटक पर छोड़ दिया जाता था, उस धनवान पुरू□ा की मेज़ से जो टुकड़े गिरते थे, उनसे वह पेट भरने को तरसता था। इसके अतिरिक्त कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटा करते थे। (लूका 16:19-21)

"ऐसा हुआ कि कंगाल पुरू□ा मर गया और स्वर्गदूतों ने आकर उसे इब्राहीम की गोद में पहुँचा दिया। वह धनी पुरू□ा भी मरा और दफ़ना दिया गया।" (लूका 16:22)

अब्राहम की तरह की जगह भांति आराम की जगह है उसके लिए जो लोग मरने के बाद वहां पहुंचेगे। स्वर्ग अभी तक खोला नहीं गया था। स्वर्ग तब से बंद है जब से आदम और हवा ने पाप किया। वह स्वर्ग मे बाद में जाएगा। अब्राहम की तरफ के लोग वे लोग है जो वायदा किए हुए मसीह पर क्यिवास करतें हैं। वे तब तक वहां पर होगे जब तक यीच्यु नहीं आ जाता।

भिखारी इसलिए अब्राहम की तरफ नहीं गया की वह गरीव है। वह इसलिए गया कि उसने परमेच्यवर के वचन व वायदा किए हुए मसीह पर क्यिवास किया।

"...धनी व्यक्ति भी मरा और दफना दिया गया। तब अधोलोक में अत्यन्त पीड़ा में पड़े हुए उसने अपनी आप्रखें उठाई और दूर से इब्राहीम को देखा जिसकी गोद में लाजर था। तब उसने पुकार कर कहा, ''हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया कर। लाजर को भेज की वह अपनी उंगली का सिरा डुबोकर मेरी जीभ को ठण्डा करें, क्योंकि मैं इस ज्वाला में पडा तड़प रहा हूप्र।" (लूका 16:22b-24)

धनी व्यक्ति नर्क मे इसलिए नहीं गया कि वह धनी था, परंतु इसलिए गया कि उसने परमेच्यवर का इंन्कार किया और जब वेा इस धरती पर था तो वो सिर्फ अपने लिए ही जिया।

ध्यान दीजिए, दोनों मरने के बाद भी जिंदा थे। एक तो अच्छी जगह पर था, पर दूसरा र्नक में था। वे बात–चीत भी कर सकते थे और महसूस भी कर सकते थे। तुम भी कहीं जीवित रहोगे हमेच्याा के लिए!

धनी व्यक्ति ने अब्राहम से सहायता की भीख मांगी परंतु अब्राहम उनकी अभी कोई मद्द नहीं कर सकता था, क्योंकि अब बहुत देर हो चुकी थी।

''परंतु अब्राहम ने कहा,' है पुत्र याद कर कि तू अपने जीवन में सब अच्छी वस्तूएं प्राप्त कर चुका है और इसी प्रकार लाज़र बुरी वस्तुंए; परंतु अब यह यहां भांति पर रहा है और तू पीड़ा में पड़ा तड़प रहा है। इसके अतिरिक्त हमारे ओर तेरे मध्य अथाह खाई निर्धारित की गई है कि यहां से कोई उस पार जाना भी चाहें तो नहीं जा सके, और वहां से यदि कोई इस पार हमारे पास आना चाहे तो न आ सके।" (लूका 16:25,26)

तब अमीर आदमी ने नर्क से अब्राहम से कहा – उसने कहा है पिता तब तो मैं तुझसे विनती कता हूँ कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज दे– क्योंकि मेरे पांच भाई है–कि वह उन्हें चेतावनी दे, कहीं ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा के स्थान में आएं। परन्तु इब्राहीम ने कहा, 'उनके पास मूसा और नबी हैं; वे उनकी ही सूने।' परन्तु उसने कहा, है पिता इब्राहीम, नहीं; यदि मृतकों में से कोई उनके पास लौटकर जाए तो वे मन फिराएगें।' परन्तु उसने उस से कहा, 'यदि वे मूसा और नबियों की नहीं सूनते तो वे उसकी भी जो मृतकों में से जीवित हो कर उनके पास जाए, नहीं सूनेंगे'।

वायदा किया हुआ मसीह बाइबल मे है। लोगों को मरने से पहले क्यिवास करने की जरूरत है। उनकी मृत्यु के बाद बहुत देर हो चुकी होती है तब कुछ नहीं हो सकता है।

कुछ लोग सोचते है कि वे स्वर्ग जाएंगे क्योंकि वे अच्छे हैं या वो चर्च में जाते हैं।

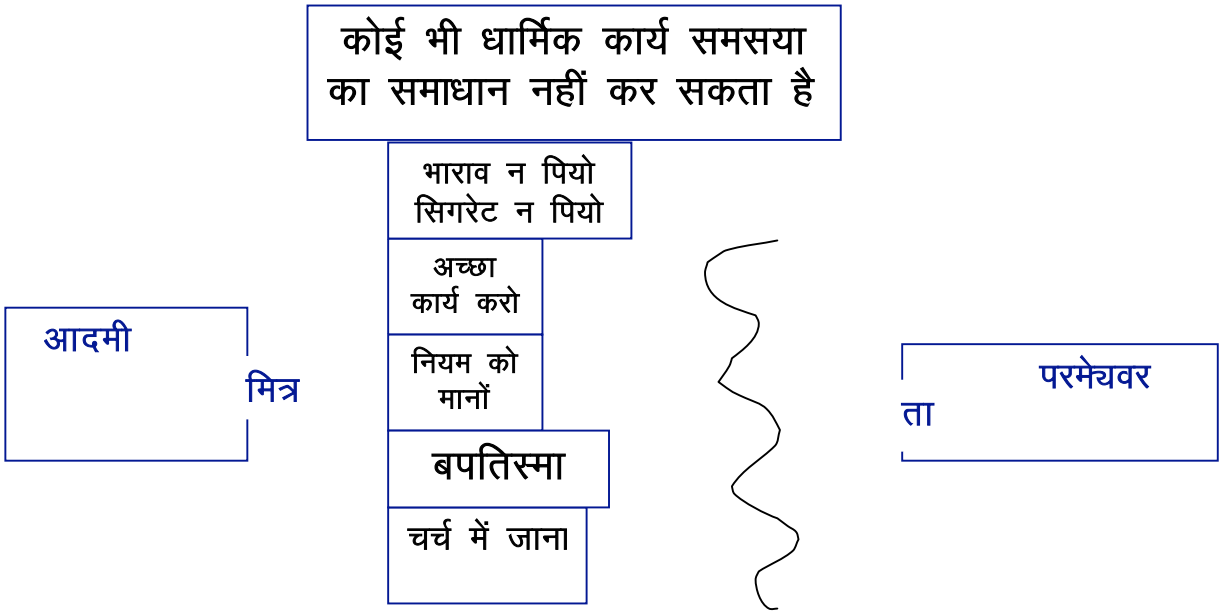

केवल वलिदान किया हुआ लहु ही हमारे पापों को धो देता है और हमारे लिए स्वर्ग का रास्ता खोल सकता है। केवल यीशु ही हमें अन्नत जीवन दे सकता है।

गरीव भिखारी भी उस अमीर व्यक्ति की तरह ही पापी था। दोनों ही माफी के लायक नहीं थे। गरीब व्यक्ति ने जो वरदान पाया वो उसके योग्य नहीं था।

"परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया की उसने अपना एकलोता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करें वह नाश ना हो परंतु अन्नत जीवन पाएं।" (यूहन्ना 3:16)

यह मेमना कौन है?

अध्याय 18
यीशु का पकड़वाया गया

यीशु ने यरूशलेम की यात्रा गधे के उपर सवार हो कर की। राजा अधिकतर सफेद घोड़े पर सवारी करता है। उसके चेलों ने सोचा कि वह उनका छुटकारा देने वाला बन के आ रहा है और उनके भावी रोमी साम्राज्य को हराने के लिए आ रहा है।.....वे चिल्लाए धन्य है वो जो प्रभु के नाम से आता है।!" (मरकुस 11:9)

यीशु ने फसह का पर्व अपने चेलो के साथ मनाया। जैसे उन्होने रोटी तोड़ी और जूस को पिया उसने कहा यह–यह वाचा }वायदा और नियमध का वह लहू है जो बहुतो लिए बहाया जाता है।" (मरकूस 14:24)

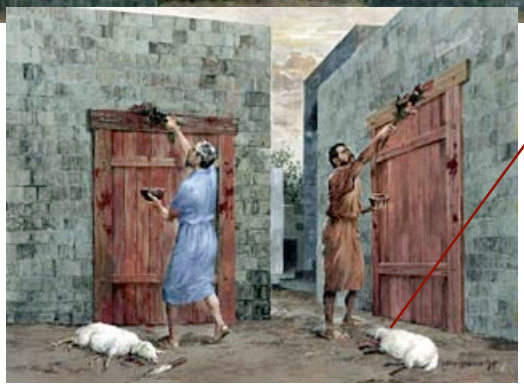

यीशु जानता था कि वह मरने वाले हैं। ''तूम जानते हो कि दो दिन के पश्चात फसह का पर्व आ रहा है और मनु□य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए पकड़वाया जाएगा।'' (मती 26:2)

वह जानता था कि वह ***वायदा किया हुआ मसीह*** और फसह का मेमना है और उसे हर एक मनु□य व पापियों के स्थान पर अक्षय मरना है । उसने पिता से प्रार्थना कि अगर और कोई तरीका है इसके लिए तो वो अच्छा है अन्यथा उसने कहा–.....परन्तु मेरी नहीं तेरी इच्छा पूरी हो।'' (मरकूस 14:36)

यीशु ने अपना लहु ठीक गतसमनी के बगीचे में ही बहाया। उस का पसीना **लहू** के रूप मे वहां गिरा।

यीशु के चेलों मे से एक चेले यहूदा ने 30 चांदी के सिक्के लिए ताकि यीशु को धोखे से पकड़वाए। धार्मिक लोग आए और उन्होंने यीशु को पकड़ लिया। यीशु अपने आप को परमेश्वर का पुत्र कहता था इस बात से धार्मिक लोगों को मुश्किल हुई थी। '' (लूका 22:47–54)

रोमी अगुवा पिलातुस और यहूदी अगुवा हेरोदियस दोनों ने यीच्यु का न्याय किया। उन्होने उन लोगो की बातो को सुनने का फैसला किया जिन्होने यीच्यु को क्रुस पर चढ़ाने की मांग की थी। (लुका 23:1-25).

यीच्यु का मजाक उड़ाया गया और उसे मारा गया। उसने अपना लहू बहा दिया।

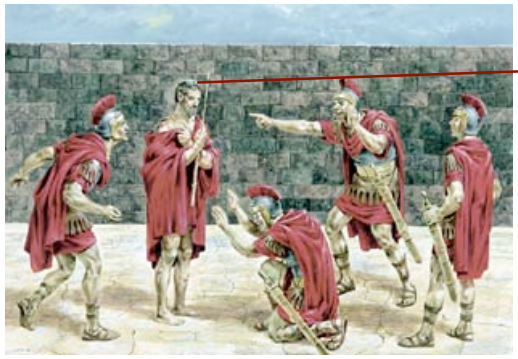

यीच्यु ने कभी भी गलत नहीं किया था। उसने कभी भी पाप नहीं किया था। वह हमेच्याा ही दयालु था। उसने जो बहुत बुरें पापी थे उनसे प्यार किया और उन्हे चंगा भी किया। उसने हमेच्याा टेक्स को अदा किया अैर नियमों का पालन किया। उसके समान और कोई सिद्ध व्यक्ति इस दुनियां में नहीं जिया।

धार्मिक लोगों ने उसके उपर थूका, आखों पर पट्टी बांध कर मुक्का मारा। (मरकूस 14:65)

रोमी और यहूदी अगुवे ने उसके लिए उसे दण्ड़ दिया जो उसने कभी नहीं किया था।

उन्होने उसकी दाढ़ी को नोचा। उन्होने बड़े काटों का ताज उसे पहनाया। उसने हर बार अपना लहू बहाया। उन्होने उसे लोहे के कोड़े से मारा। इसके द्वारा उसकी पीठ पर घाव से खुल गए थे और उसके कारण वो लगभग मरने को हो गया।

उन्होने उसका मजाक उडाया उसे तुच्छ ठहराया। परन्तु फिर भी वो निर्दो□ा था।

अध्याय 19
यीशु कूस पर चढाया गया

आप पूछ सकते है कि ''यदि यीशु पमेश्वर थे तो क्यों बूरे लोग उसे यातना दे पाए और उसे मार पाए?'' इस प्रश्न का उतर इस अध्याय में मिलेगा। यूहन्ना भुरूआत से जानते थे कि यीशु ही मेमना है।

यीशु ने अपने झूठे मुकदमों के समय में बहुत दुःख उठाया। उसने कई बार अपना लहू बहाया और यातना दी गयी। उसे पांच बार न्यायालय में लाया गयाः तीन बार यहूदी और दो बार रोमी न्यायालय में। छठी बार का अन्तिम मुकदमा था।

अब तो लोगों की भीड़ भी यीशु पर दो□ा लगा रही थी। उन्होनें चिल्लाना भुरू किया इसे कुस पर चढाओं।

रोमन अधिकारी पिलातुस यीशु को दण्ड़ देकर छोडने की सोच रहा था। यह दण्ड कठोर कोडो की मार थी। उन्होनें चमड़े के कोड़े के अन्त में हड्डी और लोहे के टुकडे वाले कोडे इस्तेमाल किए और यह भारीर के हिस्सों में फंस जाते थे। और निकलते समय मांस को फाड देते थे।

अधिकतर इसमें दण्ड पाने वाला मर जाता था।

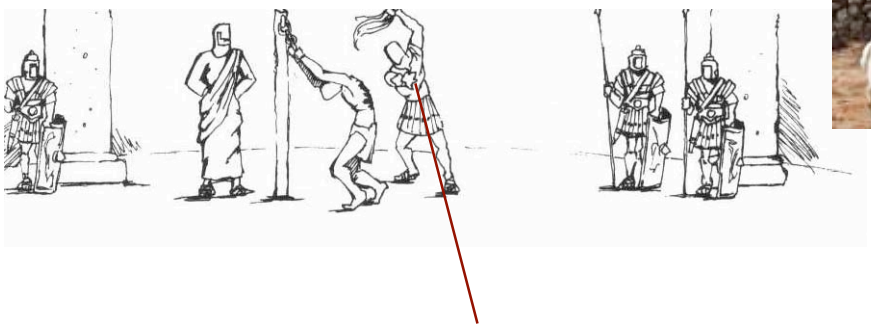

यहूदी, रोमी और लोग सोच रहे थे कि वे लोग यीशु को मार रहें हैं। पर यीशु जानते थे कि वे स्वयं मरने जा रहे हैं। दरअसल में वह खुद अपने को हमारे लिए दे रहा था।

"कोई उसे मुझ से नहीं छीनता, परन्तु मे उसे अपने आप ही देता हूप्र। मूझे उसे देने का आधिकार है, और फिर ले लेने का भी आधिकार है।यह आज्ञा मेने अपने पिता से पाई है।" (यूहन्ना 10:18)

"तब वह [यीशु] उन्हें उपदेश्या देने लगा कि अक्श्य है कि मनु□य का पुत्र [यीशु] बहुत दुख उठाए और प्राचीनों, महायाजकों और भाास्त्रियों द्वारा तिरस्कृत किया जाकर **मार डाला जाए** तथा तीन दिन के बाद पुनः जीवित हो उठे।" (मरकूस 8:31)

"तब पिलातुस ने उस से कहा, ''क्या तू मुझ से नहीं बोलेगा? क्या तू नहीं जानता की तुझे छोड देने और कूस पर चढाने का भी मुझे आधिकार है? यीशु ने उतर दिया, ''यदि तुझे उपर से न दिया जाता तो तेरा मुझ पर कोई आधिकार न होता, इसलिए जिसने मुझे तेरे हाथों में सौंपा है उसका पाप अधिक है।" (यूहन्ना 19:10,11)

पिलातुस ने अन्तिम में लोगो के व धार्मिक अगुवों के हाथों में यीशु को दे दिया।

"तब उसने क्रुस पर चढाए जाने के लिए उसे उनके हाथ सौंप दिया। इसलिए वे यीशु को ले गए, और वह अपना क्रुस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो 'खोपड़ी का स्थान' कहलाता है। और इब्रानी में 'गुलगुता' कहते हैं। वहां उन्होने उसे और उसके साथ दो और मनु□यों को क्रुस पर चढाया, एक को इस ओर तथा दूसरे को उस ओर, और बीच मे यीशु को।" (यूहन्ना 19:16-18)

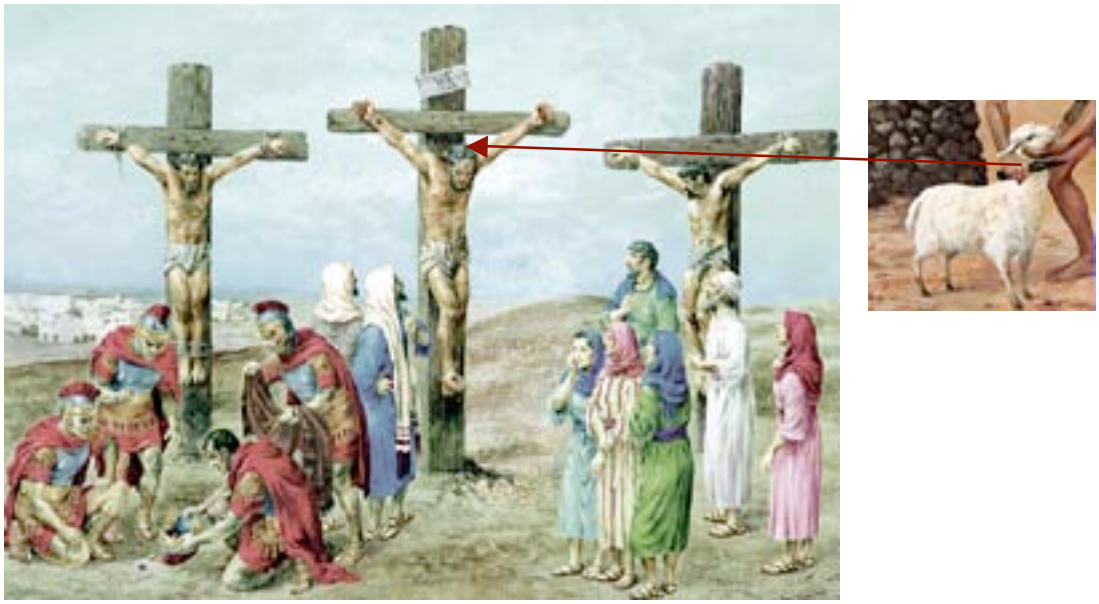

अध्याय **20**

यीशु ही मेमना है!
वह ही *वायदा किया हुआ मसीह है!*

"दूसरे दिन उसने यीशु को अपनी ओर आते देख कर कहा, "देखो परमेश्वर का मेमना जो जगत का पाप उठा ले जाता है!" (यूहन्ना 1:29)

"अब वहां यीशु के क्रूस के पास उसकी माता, और माता की बहिन, क्लोपास की *पत्नी* मरियम, और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं। तो जब यीशु ने अपनी माता, और उस चेले को जिस से यीशु प्रेम करता था पास खड़े हुए देखा तो अपनी माता से कहा, "नारी! देख, तेरा पुत्र!" तब उसने चेले से कहा, "देख, तेरी माता!" और उस समय से वह चेला उसे अपने *घर* ले गया।" (यूहन्ना 19:25-27)

यीशु ने क्रूस पर पूरे दिन दुःख उठाया। यह बहुत भयानक और धीरे–धीरे वाली मृत्यु थी। केवल खतरनाक मुजिरम ही क्रूस पर चढाए जाते थे। इससे भयानक और कोई दण्ड/यातना के बारे में नहीं सोचा जा सकता था।

यीशु मर गया। "और तीन बजने (नोंवे घंटे) पर यीशु ने उँचे स्वर मे चिल्ला कर कहा, ''इलोई, इलोई, लामा भाबक्तनी?' जिसका अर्थ है, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया" (मरकुस 15:34)

इन सब का मतलब क्या है?

छोड़ने का मतलब है अलग होना।

आदम परमेश्वर से अलग हो गया था।

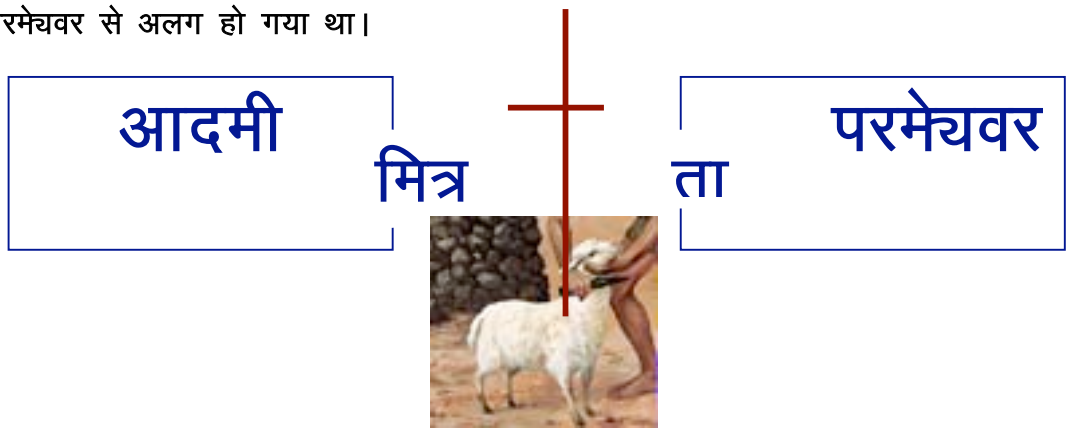

वायदा किया हुआ मसीहा, यीशु जो मनु□य के पापों के बदले कीमत चुकाएगा ताकि मनु□य परमेश्वर के साथ मित्रता में फिर वापिस मिल जाए इसकी कीमत इस निर्दो□ा व्यक्ति के लिए कि वह छोड़ दिया जाए या परमेश्वर से अलग किया जाए।

यीशु को परमेश्वर से अलग होना पड़ा ताकि आप और मैं परमेश्वर के साथ मिल सके।
यह अच्छा सुसमाचार है!

अध्याय 21
यीशु पुर्नउत्थानित हुआ

रोमी साम्राज्य ने सेनिकों का एक कड़ा दल कब्र बिठा दिया। क्योंकि धार्मिक लोग जिन्होने उसे मारा था इक्टठे हो कर पिलातुस के पास जा कर कहा, ''महोदय हमें याद है कि उस दोखे बाज़ ने अपने जीते जी कहा था, 'तीन दिन के बाद में फिर जी □ठूँगा।'' (मती 27:62-65)

तीसरे दिन की सुवह परमेश्वर पिता ने अपने बेटे यीशु को मृत्यु मे से जीवित किया। वह एक नई देह आत्मा में आया, न कि पुरानी देह में। उसका भारीर मांस और हड्डी का था परन्तु उसमें लहू नहीं था। वह ज्योति से भरा हुआ था।

इस प्रकार की देह का जो लोग यीशु पर क्यिवास करते हैं उनके लिए वायदा है कि वे भाारीरिक मृत्यु के बाद पाएंगे।

तीसरे दिन की सुवह ही मरियम मगदलीनी जो यीशु के पिछे चलती थी और दूसरी औरत कब्र देखने आई। और देखो, एक बहुत ही भारी भूकम्प हुआ, क्योंकि परमेश्वर का एक दूत स्वर्ग से उतरकर आया और पत्थर को अलग लुढ़का कर उस पर बैठ गया।

परंतु स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, ''डरो मत, क्योंकि मै जानता हूं कि तुम यीशु को जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूढ़ रही हो। वह यहां नहीं है, क्योंकि वह अपने कहने के अनुसार जी उठा है, आओ, उस जगह को देखो जहां वह पड़ा हुआ था। उसके चेलों को भीघ्र जाकर बताओ कि वह मरे हुओं में से जी उठा है, और देखों वह तुम से पहले गलील को जाएगा–वहां तुम उसे देखोगे। देखो, मैने तुम्हें बता दिया है।'' इस पर वे भय और बड़े आन्नद के साथ भीघ्र क़ब्र से लौटी और चेलों को यह समाचार देने के लिए दौड़ पडी।'' (मती 28:5-8)

''वे भय और बडे आन्नद के साथ कब्र की ओर लौटी, और यीशु के चेलों को समाचार देने के लिये दौड़ गईं। अचानक यीशु उन्हें मिले। यीशु ने उन से कहा, ''प्रसन्न रहो।'' वे यीशु के पास आईं। उन्होंने उनके पांव पकड़कर यीशु को प्रणाम किया। यीशु ने उन से कहा , ''मत डरो। मेरे भाइयों से जाकर कहो, कि वे गलील प्रदेया को चले जाएं । वहां वे मुझे देखेगें।'' (मती 28:8-10)

मेरे हाथ और मेरे पांव देखो कि मैं वही हूं। मुझे छूकर देखो। भूत–प्रेत के हशी–मांस नहीं होता जैसा तुम मुझ मे देख रहे हो। यह कह कर यीशु ने उन्हें अपने हाथ–पैर दिखाए। जब आनन्द के मारे उनको क्यिवास न हुआ, और वे आचर्य कर रहे थे, तब यीशु ने उन से पूछा, ''क्या तुम्हारे पास कुछ भोजन है?'' उन्होने यीशु को भूनी हुई मछली का टुकडा दिया। यीशु ने उसे लेकर उनके सामने खाया। (लुका 24:39-43)

"तब यीशु ने पवित्र को समझने के लिए उनकी बुद्धि खोल दी तब वो वचन को समझने लगे। और उन से कहा ''धर्मभाास्त्र में यो लिखा हैः और उसके लिए यह जरूरी है की मसीह दुःख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा;" (लुका 24:45,46)

यीशु ने जो आप ने मेमने के बारे अभी तक पढ़ रहे हैं उस कहानी को इन लोगों को बताया उसने मूसा, भवि□यवक्ताओं और भजन सहिंता से उन्हें बताया कि वह कौन है।

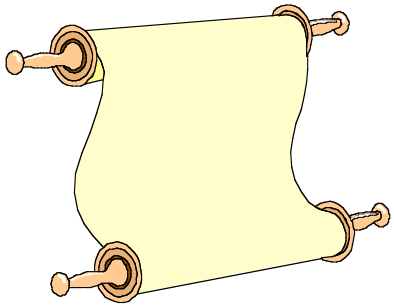

यीशु का सूली पर आप के लिए और मेरे लिए मरना परमेश्वर की असली योजना थी। यीशु ने अपने लिए के लिए वचन की समझ को खोल दिया और उन्होने जो मैने और आप ने इस किताब में देखा है उसमें देखा कि मेमना कौन है

पुर्नउत्थान एक प्रमाण है कि यीशु ***वायदा किया हुआ मसीह*** **है! यीशु ही परमेश्वर का मेमना है जो हमारे पापों को उठा ले जाता है।**

"यीशु उन्हे बैतनि□याह गांव तक बाहर ले गए। वहां उन्होंने अपने हाथ उठाकर उन्हें आशी□ा दी। जब की वह उन्हें आशी□ा दे रहा था तो वह उन से अलग हो गया और वह स्वर्ग में उठा लिए गए। शि□य यीशु को प्रणाम कर बहुत आनन्द के साथ यरूशालेम को लौट आए।" (लुका 24:50-52)

यीशु ने वायदा किया कि वो फिर इस दुनिया में दूसरी बार आएगा। वह जरूर आएगा। क्या आप तैयार हैं?

अध्याय 22
प्रार्थना

अगर आप इन चीजो मे स्प□ट नहीं है तो इस प्रार्थना के द्वारा आप आश्वस्त /निश्चित हो सकते हैं:– हे परमेश्वर मैं खोजी हूँ मैं आप के बारे में आप कौन हैं, सत्य जानना चाहता हूप्र कि आप अपने आप मुझ पर प्रकट करें। मैं चाहता हूँ कि आप मुझे अपना नाम बताएं। मै इसे अपना व्यक्तिगत बनाना चाहता हूँ न कि किसी किताब व मनु□य द्वारा। अब आप इमानदारी से अपने हृदय को परमेश्वर के पास उंडेलिए और बताइए की आप कैसा महसूस करते हैं। आप अपनी भांका ,डर इत्यादि को भी बता सकतें हैं।

अगर वायदा किए हुए मसीह को प्रार्थना द्वारा स्वीकार करना चाहते हैं और पापों की माफी पाना चाहते हैं तो आप अभी कर सकते हैं। हे परमेश्वर में क्यिवास करता हुँ कि आप ने यीशु को ***वायदा किए हुए मसीह*** के रूप में पुराने जीवन को लेने के लिए भेजा है और मैं उसके जीवन को पाना चाहता हूप्र। मैं फिर से आपके परिवार मैं जन्म लेना चाहता हूँ ताकि मैं तुझ से मिला रह सकूं। मैं क्यिवास करता हूँ कि यीशु ने मेरे लिए अपना लहू वहाया है। मै क्यिवास करता हुप्र कि जब में मरा तो उसने मेरे पुराने जीवन व उसके साथ उस दण्ड को भी ले लिया जो उसके साथ मुझे मिलना था। मैं क्यिवास करता हूप्र कि वो अपना जीवन मुझे देने के लिए मृत्यु से जी उठा। मै स्वीकार करता हूप्र कि यीशु मेरा मालिक और मेरा प्रभु है। मै मेरे जीवन का नियन्त्रण यीशु को आज से सौंपता हूप्र।

आध्याय 23
मुर्तियों से मुड़ना

अगर आपने यीच्यु को अपना प्रभु बनाया है आप स्वर्ग मे जाएगे जब आप इस भारीर को छोड देगे अब आप मे लहू द्वारा धर्म भाई है जो परमेच्यवर की उपस्थिति मे अनन्त तक हमेच्याा के लिए रहेगे।

फिर भी आप की इस दुनिया मे अभी रहना है ऐसा नही है कि यीच्यु मसीह जब तक आप स्वर्ग में नही आ जाते तब तक सम्बन्ध बनाने के लिए आप का इतजार कर रहा है।

यीच्यु आप की हर एक जरूरत को इस धरती पर पूरा करेगा, यद्यपि उसने हमें चिताया है कि सतावट भी होंगें।

पहले आप को हर एक जिसको आप मूर्ति मानते हैं या कोई और चीजों को जिसको आप अधिक महत्व देते हैं उन से आप को फिरना होगा यीच्यु आप के दिल में जो उसकी जगह हैं वह किसी मूर्ति से नहीं वांटेगा। मुर्ति क्या है? कोई भी और कोई चीज जिसने आप की जरूरत को पूरा किया है।

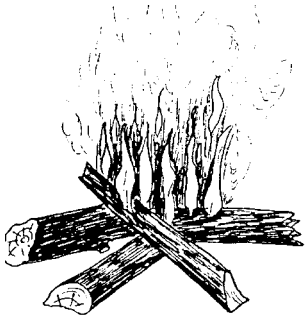

मैं चाहता हूप्र कि आप खडें हो जाईए और पच्चिचम की और मुड जाईए जैसे आप अपने मूर्तियो को देख रहे हो। अब आज्ञाकारिता के रूप में यीच्यु की और मुडते हुए पूर्व की और मुड जाएं। अब मूर्तियां आप के पीछे है और अभी आप यीच्यु को देख रहें हैं।

यीच्यु अपने वचन के द्वारा आपकी जरूरत पुरी करता है। उसका वचन वीज है जो आप के ह्रदय रूपी मिटटी मे वोया गया है। मरकुस अध्याय को पढिय और देखिए कि कैसे वचन के द्वारा फल आपके ह्रदय में उत्पन्न (पैदा) होता है। परमेच्यवर के वचन के पास जाइए और उन जरूरतो के उपर उन्हे बायदे के रूप में लिजिए जो इस धरती में रहते हुए हैं।

फिर यीच्यु ने उन से कहा, ''क्या तुम यह दृ□टांत नहीं समझते? तो फिर और सब दृ□टांतों को कैसे समझोगे? बोनेवाला वचन बोता है। जो मार्ग के किनारे के हैं जहां वचन बोया जाता है, ये वे हैः जब उन्होंने वचन सुना तो भौतान तुरन्त आकर वचन को जो उनमें बोया गया था, उठा ले जाता है। जो पथरीली भूमि पर बोए जाते है, ये वे हैः जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं। परन्तु अपने भीतर जड न रखने के कारण वे थोडे ही दिनों के लिये रहते है। इसके बाद जब वचन के कारण उन पर दुख पडता या उपद्रव होता है तो वे तुरन्त ठोकर खाते हैं जो झाडियों में बोये गए, ये वे है जिन्होने वचन सुना किंतु संसार की चिन्ता, धन का धोखा और वस्तुओं का लोभ उन में समा कर वचन को दबा देता है।वह नि□फल रह जाता है ।

जो अच्छी भूमि में बोए गए, ये वे हैं जो वचन सुनकर ग्रहण करते और फल लाते हैंः कोई तीस गुना, कोई साठ गुना, और कई सों गुना।" (मरकुस 4:13-20)

यीशु को अनुमति दीजिए कि वो आपके हृदय में अपने वचन का बीज बोए भौतान का विरोध किजिए जब वो बीज को जो उसके वचन हैं चुराने की कोशिश करे, और फिर वो बीज बहुत सा फल लाएगा जो आप की जरूरत को जो उस धरती में रहते हुए है पूरी करेगा।

यह आप को और भी यीशु की तरह बनाएगा, यह आप की हर एक भारीरिक जरूरत को पुरा करेगा जैसे खाना, सेहत, और यह दुसरे लोगों को भी यीशु के पास लाएगा ताकि वो भी आशीर्वाद पाएं।

परन्तु सावधान। बीज बढने में बहुत समय लगता है और फल देने में भी, और यीशु भी चेतावनी देते है कि भौतान भी आप को कई तरह से धोखा देने की कोशिश करेगा ताकि वो बीज को चुरा ले। ऐसा भी लगेगा कि वचन का बीज भायद काम नही कर रहा है। पर आप हर रोज मजबूत खडे रहे और यीशु को हर रोज़ सुनें ताकि वह अपना जीवन आप के द्वारा जिए जब तक आप विजय को नही पा लेते है।

अध्याय 24
आजाद हो जाओ

यीच्चु का क्रूस या लहू की वाचा ने हमे परमेच्चर की सभी आचि□ा हमे दे दी और यीच्चु को मनु□य के हर एक श्राप और पाप दे दिए हैं।

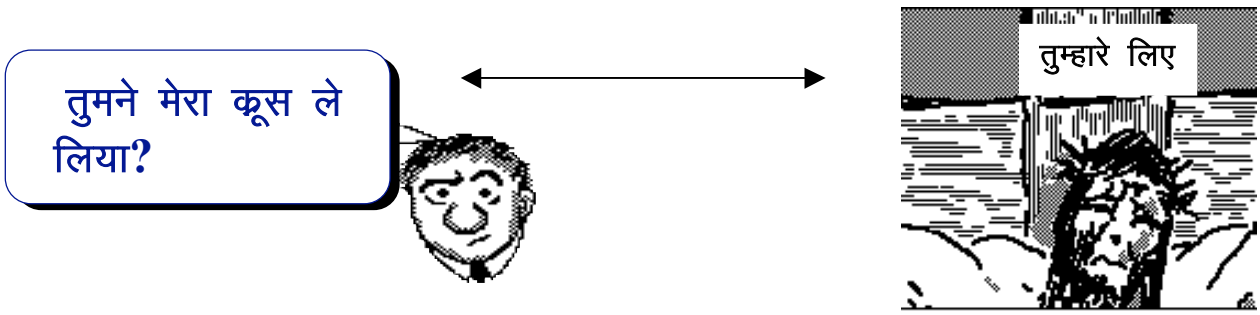

मसीह हमारे लिये स्रापित बना, और हमें मोल लेकर व्यवस्था के स्राप से छुडाया; क्योंकि धर्मच्चास्त्र में लिखा है, ''जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह च्चापित है।'' (गलातियो 3:13)

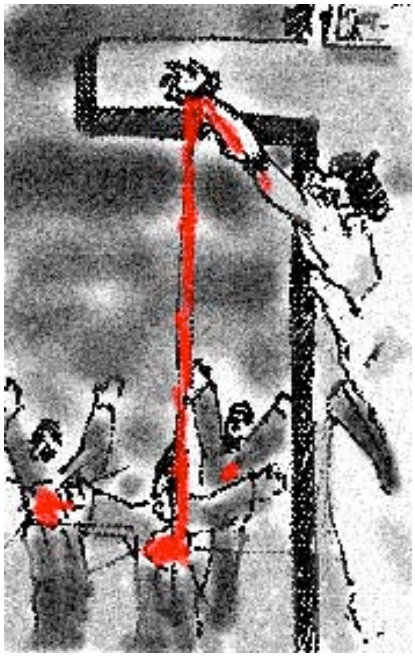

बरअब्बा की कहानी : मत्ती 27: 16 बताती है कि बरअब्बा एक कुख्यात कैदी था । गुलगुता में 3 कुस थे। वो कुस जो दोनो तरफ लगे हुऐ थे अपराधियो के लिए बनाए गए थे और तीसरा बीच का कुस किस के लिए बना था यीशु के लिए? नही। यह बरअब्बा के लिए बना था। यीशु ने उसकी जगह ले ली। यशा:53 बताती है कि यीशु ने हमारी जगह ले ली।

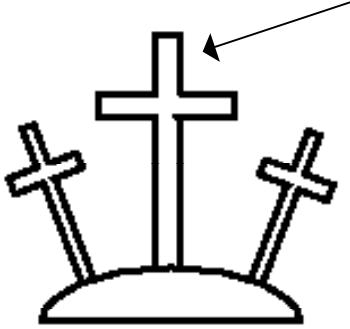

यशायाह 53:4-6 बताती है निचय उस ने हमारे रोंगो को यह लिया और हमारे ही दुःखो को उठा लिया; तो भी हम ने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दशा में पडा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताडना पडी, कि उसके कोडे खाने से हम लोग चंगे हो जाए। हम तो सब के सब भेडों की नाई भडक गए थे; हम में से हर एक ने अपना–अपना मार्ग लिया; और प्रभु ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।

यहां पर कुछ खास महत्वपूर्ण आदान प्रदान यीशु ने हमारे लिए किए है कि हम उसका आनन्द उठाएं।

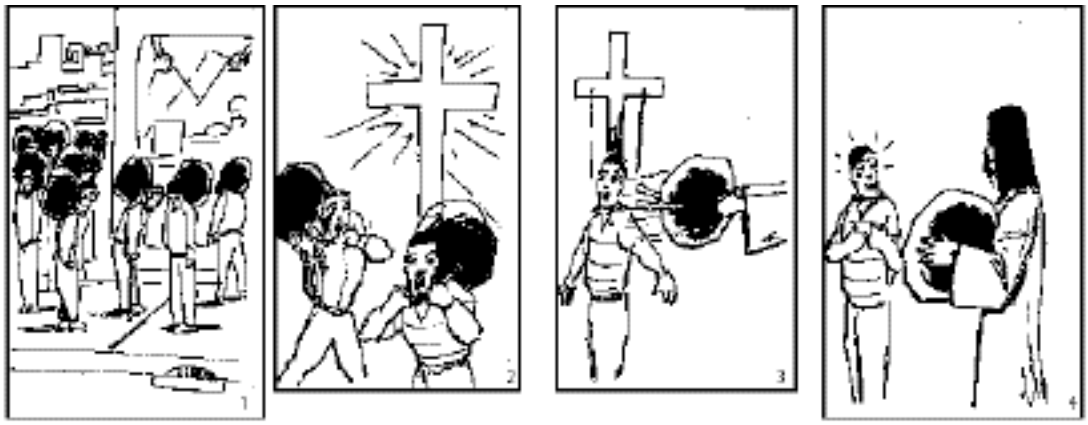

1. यीशु को **दण्डित** किया गया कि हमें **माफी** मिल सके।
(यशायाह 53: 4-5, इफिसियों 4:32, कुलुस्सियो 2:13).

2. यीशु को **घायल** किया गया कि हमे **चंगाई** मिल सके। (यशायाह 53:4-5, मत्ती 8:16-17, 1 पतरस 2:24).

3. यीशु को हमारे पापों के लिए **पापी ठहराया** गया हम उसकी धार्मिकता से **धर्मी बन** जाए। (यशायाह 53:10, 2, कुरिन्थियों 5:21).

धार्मिकता–का मतलब परमेश्वर के सामने धर्मी प्रस्तुत होना (रोमियो 3:22, रोमियो 4:6, रोमियो 10:10).

4. यीशु ने हमारी **मृत्यु** को ले लिया कि हम उसके **जीवन** के भागी हो जाए।
पाप कि मजदुरी मृत्यु है। (रोमियो 6:23, इब्रानियों 2:9, यूहन्ना 8:52).

5. यीशु हमारे लिए **श्राप** बन गया ताकि हम परमेश्वर की **आशिष** को पाए। (गलातियों 3:13-14, व्यवस्थाविवरण 21:22-23, व्यवस्थाविवरण 28:1-13).

कुछ श्राप:
मानसिक और भावनात्मक समस्याएं .
लगातार और पुरानी बिमारी–खास पीढीयों से चली आ रही।
लगातार गर्भपात और महिला सम्बधी समस्याएं।
शादी और परिवारो का टूटना–गलत व्यक्ति से शादी।
लगातार रीति से पैसे की तंगी, जबकि कमाई ठीक दिख रही हो ।
दुर्घटनाएं–पीड़ित होना
आत्महत्या–आकस्मातिक मृत्यु
शराब और नशो का आदी होना
आधिकारियों के प्रति विद्रोह
अस्वाभाविक शारीरिक अभिलाषाओं की ओर झुकाव

क्रूस के सामर्थ्य को महत्व देने से /अवसर देने से आप बहुत से श्रापों से छूट सकते हैं। तैयार हो जाईए!

6. यीशु ने हमारी **निर्धनता** को ले लिया ताकि हम उसकी **बहुतायत** में सहभागी हो जाएं। (2 कुरंथियों 8:9 और 9:8)
पर्याप्त का मतलव–काफी होता हैं, बहुतायत का मतलव–काफी से बहुत ज्यादा होता हैं ताकि हम दुसरो को भी आशिष दे सकें। यीशु क्रूस में भूखा, प्यासा और नंगा था।

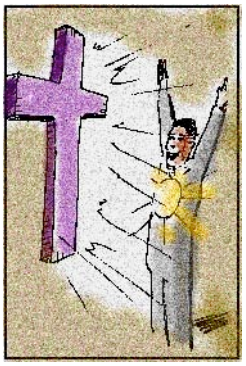

7. यीशु ने हमारी **शार्म** को उठा लिया ताकि हम **उसकी** माहिमा को ले लें। (मती 27:35-36).
इब्रानियों 2:10 में बताती है कि यीशु ने बहुत से पुत्रो को माहिमा मे पहुंचाया (न कि शार्म के)
हम पवित्र आत्मा की भरपूरी को पा सकते हैं। पवित्र आत्मा शार्म को हराती है।
शारीरिक दुरव्यवहार–शार्म को लेके आती हैं।
हम दासत्व का दृष्टि कोण शार्म के कारण पा सकते हैं।
हममे स्वयं दया की समस्या भी शार्म के कारण हो सकती है।

8. यीशु ने हमारे **तिरस्कार** को ले लिया ताकि हम उसके द्वारा पिता में **स्वीकार किए जाऐं** (मती 27:45-51)। पिता ने अपने चेहरे को यीशु की तरफ से मोड लिया और हमारे लिए उसका तिरस्कार किया। इफिसियों 1:6 बताती है कि हम पिता के द्वारा स्वीकार किए हुए है।
लोग भुखे हैं कि उन्हें स्वीकार किया जाए या महसूस करने के लिए कि उनका भी कुछ स्थान है या कुछ महत्व है। सिर्फ यीशु ही यह सब दे सकता है। उसकी कलिसिया एक जगह है जहां से हम जुड सकते हैं।
बच्चों को अपने पिता की स्वीकृति की आवश्यकता होती है।
प्रेम को खुले रूप में प्रकट करना चाहिए
तलाक तिरस्कार को लाती है। (यशायाह 54:6)

यीशु टुटे हृदय वालो के लिए मरा.

“इसलिए जैसा की मसीह ने भी परमेश्वर की महिमा के लिये तुम्हें स्वीकार किया है वैसे ही तुम भी एक दुसरे को स्वीकार करो।(रोमियो 15:7). परमेश्वर ने हमारे पापी स्वभाव में भी स्वीकार करता हैं। (इफिसियों 1:3-6).

9. यीशु मृत्यु के द्वारा **परमेश्वर से बिलकुल अलग हो गया** था कि हम लोग परमेश्वर कि हम लोग **परमेश्वर की उपस्थिति** का अनन्त तक आनन्द उठाएं। (मती 27:46, यशायाह 53:8, इब्रानियों 10:21-22, यहुदा 24, कुलुस्सियो 1:27, इफिसियों 3:16-20).
हमारी भावनात्मक सुरक्षा की जरूरत परिपूर्ण हो गई है।
पवित्र आत्मा की परिपूर्णता हमारे लिए उपलब्ध है हमे परमेश्वर की उपस्थिति प्रदान करने के लिए। (प्रेरितो 1:8)

10. हमारा पुराना मनुष्यत्व ऋपापी स्वभावऋ को **मार** दिया गया ताकि नया मनुष्यत्व ऋयीशु का स्वभावऋ का **जीवन** हममे उत्पन्न हो जाए।ऋरोमियो 6:6, गलातियों 2:20ऋ पापों की माफी महत्वपूर्ण है और परमेश्वर हमारे पुराने मनुष्यत्व को दूर करता है।

11. यीशु ने हमारे **दुःख** को अनुभव किया और **तकलीफों** को उठा लिया ताकि हम **खुशी और आनन्द** को पाएं। ऋयशायाह 53, यशायाह 35:10, यशायाह 51:11ऋ।
किसी प्रियजन की मृत्यु, किसी प्रकार की हानि, आने वाली तवाही नियन्त्रण से बाहर चिन्ता और दुख आशाहीनता को आपके जीवन में लाते है यहां तक आत्महत्या की सम्भावना भी हो सकती है। पवित्र आत्मा हममें आनन्द को ले के आती है।
12. यीशु ने हमारे लिए **नियमों** का पालन किया ताकि हम **अनुग्रह** में जी सकें। (रोमियो 7:6 और 8:1-4, इफिसियों 2:8-9, गलातियों 3:1-3).
रूढिवादिता में जीना, शारीरिक ताकत को महत्व देती है। (1 कुरिन्थियों 15:56)। यह निराशा, असफलता, लत, दोषीपन, और विश्वास में पीछे हटने की बातो को लाती हैं।
13. यीशु को **यातना** दी गई ताकि हम **शांति** का आनन्द उठाएं। (यशायाह 53:5, फिलीपियों 4:7).

14.यीशु को **तुच्छ** ठहराया गया ताकि हम **महत्व** पूर्ण बन जाएं। वह एक दास के दाम में बेचा गया। (मती 26:15,
1 पतरस 1:18-19)। जो किमत परमेश्वर ने हमारे लिए चुकाई उसके द्वारा हम महत्वपर्ण बन जाते है।

15. यीशु संसार के द्वारा **पकडवाया** गया ताकि हम इस बुरे संसार से **आजाद** हो जाएं। (गलातियों 1:4 और 6:14). यह संसार हमारे लिए मर चुका है और हम भी इस संसार के लए मर चुके हैं।

16. **दुष्ट को हराया गया है।** यीशु ने (ऐसा प्रदर्शित किया) **दुष्ट की हार को सहन किया** ताकि हम **दुष्ट के उपर विजय का आनन्द उठांए।**

□ुस समपूर्ण था। उसने भौतान को न्यिास्त्र कर दिया और हरा दिया और हर एक दु□टता को खत्म किया। कई बार ऐसा लगता है कि दु□ट आप की तरफ आ रहा है । कोई बात नहीं अगर कुछ बुराई आप को छू रही हो यह आच्यी□ा में परिवर्तित हो जाएगी। कुलुस्सियों 2:14-15 कहती है, "[यीच्यु] और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला; और उस को □ुस पर कीलों से जडकर साम्हने से हटा दिया है। और उस ने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने उपर से उतार कर उनका खुल्लमखुल्ला तमाच्या बनाया और कुस के कारण उन पर जय–जय कार की ध्वनि सुनाई।" और इसे इनमें भी देखें मरकुस 16:15–19 और रोमियों 6:9।

कैसा अदभुत प्रेम है यह कि आप जो मेरे राजा थे मेरे लिए मर गए?